Marketing Series No. 26.

AMA. 26.
500

AGRICULTURAL MARKETING IN INDIA

हिन्दुस्तान में अण्डों का व्यापार

(संक्षिप्त)

PUBLISHED BY THE MANAGER OF PUBLICATIONS, DELHI.
PRINTED AT THE JAYYED PRESS, DELHI.
1941.
मूल्य : आठ आना या नौ पैंस

List of Agents in India and Burma from whom Government of India Publications are available.

BBOTABAD—English Book Store.
?RA—
English Book Depot, Taj Road,
Indian Army Book Depot, Dayalbagh.
National Book House, Jeonamandi.
HMEDABAD—
Chandrakant Chimanlall Vora.
H. L. College of Commerce, Co-operative Store Ltd.
JMER—Banthiya Co., Ltd., Station Road.
LIGARH—Rama Book Depot, Sarai Hussain.
LLAHABAD—
Kitabistan, 17-A, City Road,
Ram Narain Lal, 1, Bank Road.
Superintendent, Printing and Stationery, U. P.
Wheeler & Co., Messrs. A. H.
ARODA—Prikh & Co., Messrs. B.
LASPUR—Subhan, Mr. M. A., Bookseller & Publisher.
OMBAY—
Bombay Book Depot, Charni Road, Girgaon.
New Book Co., Kitab Mahal, 188-90, Hornby Road.
Popular Book Depot, Grant Road.
Shri Samarth Book Depot, Ramchandra Buildings, Near Portuguese Church, Girgaon.
Superintendent, Govt. Printing & Stationery, Queen's Road.
Taraporevala Sons & Co., Messrs. D. B.
Thaker & Co., Ltd
Tripathi & Co., Messrs N. M., Princess Street, Kalba-Devi Road.
Wheeler & Co., Messrs. A. H.
ALCUTTA—
Book Company.
Chatterjee & Co., 3, Bacharam Chatterjee Lane.
Chukervertty, Chatterjee & Co, Ltd., 13, College Square.
Das Gupta & Co., 54/3, College Street.
Hindu Library, 137-F, Balaram De Street.
Lahiri & Co., Ltd. Messrs. S. K.
Macmillan & Co., Ltd, 294, Bow Bazar Street.
Newman & Co. Ltd., Messrs. W.
Roy Chowdhury & Co, Messrs. N. M., 72, Harrison Road.
Sarcar & Sons, Messrs. M C., 15 College Square.
Sarkar & Sons, Ltd., Messrs. S. C., 1/1/1C., College Square.
Standard Law Book Society, 79/1, Harrison Road.
Thacker, Spink & Co., (1933), Ltd
Wheeler & Co, Messrs A. H.
AWNPORE—
Advani & Co., P O Box No 100.
Standard Book Depot, Chowk Bazar.
UTTACK—Press Officer, Orissa Secretariat
EHRA DUN—Ideal Book Depot, Rajpur Road.
ELHI—
Imperial Book Depot and Press, Near Jama Masjid (Machhliwalan)
Indian Army Book Depot, Darvaganj.
Jaina & Bros, Messrs J M Morigate
Oxford Book & Stationery Co
Pioneer Book Supply Co., 219, Cloth Market
Sharada Mandir, Ltd, Nai Sarak.
Young Man & Co, (Regd), Egerton Road.
ERAKOTTAH—Rajaji Press, Ltd.
EVGAD BARIA—Joshi, Mr. V G., News Agent, Via Piplod.
HARWAR—Karnataka Sahitya Mandir, Publishers and Direct Importers
UM-DUM CANTT.—Bengal flying Club. +
EROZEPUR—English Book Depot.
WALIOR—Jain & Bros., Messrs. M. B., Sarafa Road.
YDERABAD (DECCAN)—Hyderabad Book Depot, Chaderghat.
AIPUR CITY—Goyal & Goyal, Publishers & Booksellers.
ODHPUR—Mathur & Co., Messrs. B. S., Chatter Vilas, Paota, Civil Lines.
UBBULPORE—C. P. Circulating Library and Book Depot, Civil East Street, Contonment.
ARACHI—
Aero Stores.
English Bookstall.
Standard Bookstall.

KARACHI (SADAR)—
Manager, Sind Government Book Depot and Record office.
KARAIKUDI—Rajai Press, Ltd.
KASHMIR—Rainas News Agency, The Bund, Shr Nagar
KOLHAPUR—International Bookstall, Market.
LAHORE—
Eastern Publishing and Stationery, Ltd., 10, Chamberlain Road
Imperial Publishing Cov
Kansil & Co, Messrs. N. C. 9, Commercial Building The Mall.
Malhotra & Co., Messrs. U. P, Post Box No. 94.
Minerva Book Shop, Anarkali Street.
Modern Times, Moheni Road
Punjab Religious Book Society.
Punjab Sanskrit Book Depot.
Rama Krishna & Sons, Anarkali,
Standard Book Depot
Superintendent, Govt., Printing, Punjab.
Times Book Depot, Mohan Lal Road.
University Book Agency, Kacheri Road.
LUCKNOW—
Lucknow Publishing House.
Upper India Publising House, Ltd., Literature Palace, Aminuddaula Park
LYALLPORE—Lyall Book Depot
MADRAS—
Company Law Institute, Thyagarayanagar.*
Higginbothams.
Little Flower & Co., 44, Lingha Chetty Street, G. T.
Superintendent, Govt., Press, Mount Road.
Varadachary & Co., Messrs. P.
MEERUT—
Ideal Book Depot, Big Bazar
Prakash Educational Stores, Near Tehsil.
MOGA—Army Musketry Stores
NAGPUR—
Chinev & Sons, Booksellers, etc, Dhantoli.
Superintendent, Govt., Printing, Central Provinces.
NEGAPATAM—Venkataraman, Mr. B.
NEW DELHI—
Bhawnani & Sons
Delhi & U P. Flying Club Ltd. +
Idandas Book Co. Connaught Circus (opposite Scindia House).
Jaina & Bros, Messrs J. M. Connaught Place
Ramesh Book Depot & Stationery Mart, Connaught Place.
Saraswati Book Depot, 15, Lady Hardinge Road.
PATNA—
Superintendent, Government Printing, Bihar, P. Gulzarbagh.
Verma's Cambridge Book Depot.
PATNA CITY—
Agarwala & Co., Messrs J N. P., Padri-ki-Haveli.
Raghunath Prasad & Sons.
PESHAWAR—
British Stationery Mart.
London Book Co (India), Arbab Road.
Manager Govt. Printing & Stationery, N.-W F. P.
PESHAWAR CANTT.—Faqir Chand Marwah.
POONA—
Dastane Bros., Home Service, 456, Rawiwar Peth.
International Book Service
Ram Krishna Bros., Opposite Bishram Bagh.
QUETTA—Standard Bookstall.
QUILON—Associated News Agency, Big Bazar.
RAJKOT—Mohanlal Dossabhai Shah.
RANGOON—Burma Book Club Ltd
RAWALPINDI—Ray & Sons, Messrs. J. 43, K. & L. Edwards Road.
RAZMAK—Tara & Sons, Messrs. B. S
SHILONG—Superintendent, Assam Secretariat Press.
SIALKOT CANTT.—Modern Book Depot, Bazar Road.
SIALKOT CITY—Buckingham & Co, Booksellers & Stationers, Greenwood Street.
TRICHINOPOLY FORT—Krishnaswami & Co., Messrs. S Toppakulam.
TRIVANDRUM—Booklovers' Resort, Taikad.
VELLORE—Venkatasubban, Mr. A., Law Bookseller.

* Agents for Income-tax, Law & allied Publications only.
+ Agents for Publications on Aviation only.

विषय-सूची

प्रस्तावना

"भारतवर्ष और बर्मा में अण्डों के व्यापार पर रिपोर्ट" नामक एक बड़ी पुस्तक पहिले प्रकाशित हो चुकी है। यह पुस्तक जो इस समय आपके सामने है बड़ी रिपोर्ट को छोटा करके लिखी गई है। बड़ी रिपोर्ट में वे सब बातें विस्तार पूर्वक बयान की गई हैं जो अण्डों के व्यापार की जाँच पड़ताल करने से मालूम हुई हैं। यह छोटी रिपोर्ट इस लिये प्रकाशित की जा रही है कि इन बातों को थोड़े शब्दों में बता दिया जाए। चित्रों, शक्लों और नक़्शों को देखने से जो प्रश्न पैदा होते हैं उनके उत्तर भी लिख दिये गए हैं। इन से बड़ी रिपोर्ट की लगभग सभी ज़रूरी बातें अच्छी तरह समझ में आ जाती हैं। किन्तु यदि किसी बात को और भी ज़्यादा जानने की आवश्यकता हो तो बड़ी रिपोर्ट के उन भागों और ज़मीमों (Appendices) को भी ज़रूर देखना चाहिये जिन में इस बात का वर्णन है।

आशा की जाती है कि अण्डों के व्यापार पर यह संक्षिप्त रिपोर्ट स्कूलों, खेती और पशु सम्बन्धी कालेजों, और गाँव सुधार और उद्योग धंधों की उन्नति में लगी हुई संस्थाओं के लिये लाभदायक साबित होगी।

दफ़्तर ऐग्रिकलचरल मार्केटिङ्ग ऐडवाइज़र
गवर्नमेंट आफ़ इण्डिया, देहली।
नवम्बर सन् १९४०

भूमिका

अण्डों का व्यापार भी खेती बाड़ी की एक शाखा है और यह फ़ायदे का काम भी है परन्तु इसकी ओर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। लोग यह समझते हैं कि मुर्ग़ियाँ पालने वाले आप अण्डे खाने के लिये मुर्ग़ियाँ पालते हैं किन्तु यह बात नहीं है। मुर्ग़ी के साठ प्रतिशत अंडे और बत्तख़ के अस्सी प्रतिशत अंडे बेचे जाते हैं। इससे पता चलता है कि मुर्ग़ियाँ पालने वाले जितने अण्डे आप खाते हैं उनसे कहीं अधिक अण्डे बेचते हैं। अन्दाज़े से एक साल में सवा पाँच करोड़ रुपये के अंडे बेचे जाते हैं और जिन मुर्ग़ियों और बत्तख़ों के ये अण्डे होते हैं उनका मूल्य भी लगभग साढ़े सात करोड़ रुपया होता है। सच तो यह है कि मुर्ग़ियाँ पालने से भारतवर्ष के गाँवों के बहुत सारे नागरिकों को अच्छी ख़ासी नक़द आमदनी हो जाती है और उनके लिये यह ख़ासा बड़ा कारबार है।

अण्डों का कारबार हिन्दुस्तान में कुछ अच्छे ढङ्ग से ध्यान देकर नहीं किया जाता। हर साल लगभग चौदह लाख रुपये के अण्डे तो दरबों से उठाए ही नहीं जाते। इसके अतिरिक्त चीलें, कौवे, गीदड़ इत्यादि भी मुर्ग़ियों के दरबों पर हाथ साफ़ करते रहते हैं। इससे भी अंडों की संख्या में कमी पड़ती है। यदि दरबे साफ़ सुथरे बनाए जाया करें और उन पर तार की जालियाँ लगाई जाया करें तो इससे कम हानि हुआ करेगी। ग्राम-सुधार से लगाव रखने वाले इस ओर ध्यान दें तो उनके लिये इसमें बहुत काम निकलेगा।

अण्डे गन्दे निकलने और माल को एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने में जो टूट फूट होती है उससे भी बहुत हानि होती है। साल के कुछ महीनों में तो माल का चौथाई भाग इसी हानि में चला जाता है। अन्दाज़े से इस तरह हर साल सत्तावन लाख रुपये का घाटा होता है। इस रिपोर्ट में यह बतलाया गया है कि इस हानि को कैसे कम किया जा सकता है और किस प्रकार मुर्ग़ियाँ पालने वाले अण्डों के व्यापार को बढ़ा कर उसे अपने लिए फ़ायदे का कारबार बना सकते हैं। हमारे देशवासियों की ख़ुराक़ में प्रोटीन (Protein) की जो कमी है वह भी अण्डों के व्यापार के तरक़्क़ी पाने से दूर हो सकती है।

बहुत से मुर्ग़ियाँ पालने वालों, व्यापारियों और अन्य लोगों ने इस रिपोर्ट की तैयारी में जो हमारे दफ़्तर के अफ़सरों और आदमियों की मित्रों और हमदर्दों के समान सहायता की है उन सब को धन्यवाद दिया जाता है।

पहिला अध्याय

पैदावार

हर साल हिन्दुस्तान में लगभग ३३,६४८ लाख और बर्मा में लगभग १,६३६ लाख अण्डे होते हैं। यदि इन सब को एक लाइन में रक्खा जाए तो यह लाइन पृथ्वी की परिधि से चौगुनी लम्बी होगी। हमारे देश में आम तौर से मुसलमान, ईसाई और दूसरी गिनती की कुछ जातियाँ ही मुर्ग़ियाँ पालती हैं। इस लिये हर घर पीछे मुर्ग़ियों की औसत बहुत कम है और मुर्ग़ियों की अण्डे देने की शक्ति भी घटी हुई है।

भारतवर्ष के अण्डे देने वाले पक्षियों में से ९० प्रतिशत मुर्ग़ियाँ और १० प्रतिशत बत्तखें हैं। इनके मुक़ाबले में बड़ी बत्तखों (हंस) और पीलूओं की संख्या इतनी थोड़ी है कि न होने के बराबर समझी जा सकती है। सारी दुनियाँ की मुर्ग़ियों का दसवाँ हिस्सा हिन्दुस्तान और बर्मा में पाया जाता है और चीन को छोड़ कर संसार के शेष देशों में जितनी बत्तखें हैं बर्मा और हिन्दुस्तान में उससे ज्यादा बत्तखें हैं। पूर्वी बङ्गाल, ट्रावन्कोर और कोचीन में अण्डे बहुत होते हैं। मद्रास प्रेजिडेन्सी में गोदावरी नदी के डेलटे में भी अण्डे बहुत होते हैं। उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रान्त, बम्बई प्रेजिडेन्सी के थाना ज़िला और रियासत हैदराबाद के कुछ भागों से अण्डे बहुत अधिक मात्रा में बाहर जाते हैं। संयुक्त प्रान्त में अण्डे होते भी अधिक हैं और वहाँ उनकी खपत भी ज्यादा होती है।

अण्डों की पैदावार में मौसमी उतार चढ़ाव हुआ करता है। यह उतार चढ़ाव हर उस स्थान पर, जहाँ अण्डे अधिक मात्रा में होते हैं एक ही ढङ्ग से नहीं होता। कुछ इलाक़ों में साल में तीन मौक़े ऐसे आते हैं जब अण्डों की पैदावार बहुत अधिकता से होती है। बस यह समझ लेना चाहिये कि मार्च और अप्रैल के महीनों में अण्डे ज्यादा से ज्यादा और बरसात के मौसम में कम से कम होते हैं।

भारतवर्ष में मुर्ग़ियाँ और बत्तखें हैं तो बहुत परन्तु यह हिसाब बहुत कम रक्खा जाता है कि किस मुर्ग़ी या बत्तख ने कितने अण्डे दिये। अन्दाज़े से एक मुर्ग़ी एक साल में औसतन ५३ अण्डे देती है परन्तु हर जगह की मुर्ग़ी इतने ही अण्डे नहीं देती। मद्रास की रियासतों की मुर्ग़ी ३२ अण्डों से आगे नहीं बढ़ती। संयुक्त प्रान्त की मुर्ग़ी ६५ अण्डे तक देती है। विलायती मुर्ग़ी की नसल अच्छी होती है। वह साल में १०३ अण्डे देती है; मगर विलायती मुर्ग़ियाँ हिन्दुस्तान में

थोड़ी ही हैं। वे हिन्दुस्तान के अण्डे देने वाले पक्षियों की सारी संख्या का ६¾ भाग हैं। इनकी कुल संख्या का तीन-चौथाई भाग संयुक्त प्रान्त और बिहार में पाया जाता है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि पोल्टरी फ़ार्मों (Poultry Farms) में देसी मुर्ग़ियों पर प्रयोग करने का काम बहुत थोड़ा हुआ है। सारे देश भर की ऐसी सब फ़ार्मों में देसी मुर्ग़ियाँ ८७५ और विलायती मुर्ग़ियाँ इससे नौगुनी अधिक हैं। जो कुछ थोड़े बहुत प्रयोग अब तक हो चुके हैं उनसे यह पता चलता है कि यदि अण्डे दिलाने के लिये मुर्ग़ियाँ ठीक तरीक़े से चुनी जाएं और उनका रख-रखाव अच्छा हो तो जितने अण्डे एक देसी मुर्ग़ी इस समय देती है शीघ्र ही उनसे एक-तिहाई ज्यादा देने लगेगी।

बत्तख़ के अण्डे देने का हिसाब यह है कि एक बत्तख़ एक साल में औसतन् ६० अण्डे देती है। बङ्गाल की बत्तख़ ७५ अण्डे और मद्रास की बत्तख़ १२६ अण्डे देती है। पंजाब की बत्तख़ ५० अण्डों तक ही रहती है। बर्मा की बत्तख़ इन सब से बढ़ी हुई है। वह एक साल में औसतन् १८० अण्डे देती है।

हर साल बहुत काफ़ी मुर्ग़ियाँ, यहाँ तक कि एक-तिहाई या इससे भी अधिक अर्थात आधी मुर्ग़ियाँ बीमार होकर मर जाती हैं और उनके स्थान पर और मुर्ग़ियाँ पालनी पड़ती हैं। फिर जो मुर्ग़ियाँ पालने वाले बाजार से बहुत ज्यादा दूर के स्थानों पर रहते हैं वे अधिक अण्डे स्वयं खाने के लिये भी रोक लेते हैं। इन दोनों बातों से यह समझा जा सकता है कि बाजारों में बिकने के लिये बहुत थोड़े अण्डे ही आते होंगे, किन्तु यह बात नहीं है। मुर्ग़ियाँ पालने वाले पैदावार का पाँचवा भाग ही अपने पास रोकते हैं और मुर्ग़ी के अण्डों की पैदावार का दो-तिहाई भाग और बत्तख़ों के अण्डों की पैदावार का तीन-चौथाई भाग बेच डालते हैं।

देसी मुर्ग़ी के अण्डे साधारणतया छोटे होते हैं। इसके १०० अण्डों का औसत वजन सीमा प्रान्त में ६ पौंड, ट्रावन्कोर में ८ पौंड २ औंस, और बङ्गाल में ७ पौंड १२ औंस होता है; मगर विलायती मुर्ग़ी के १०० अण्डों का वजन १२ पौंड होता है। बत्तख़ के अण्डे बड़े होते हैं। इसके १०० अण्डों का वज़न रियासत कोचीन में १७ पौंड और बङ्गाल में १० पौंड ८ औंस होता है। बत्तख़ मुर्ग़ी के मुक़ाबिले में अण्डे भी अधिक देती है और इसका अण्डा मुर्ग़ी के अण्डे से बड़ा भी होता है, किन्तु आश्चर्य की बात है कि अण्डे दिलाने के लिये बत्तखें चुनने और उनकी पैदावार बढ़ाने के लिये कुछ भी नहीं किया गया। मुर्ग़ियाँ बीमार पड़ सकती है, इसलिये उनके लिये कुछ करना कठिन हो सकता।

है, परन्तु बत्तख़ तो बीमारियों से लगभग बिल्कुल ही बची रहती है, इसलिये इसकी उन्नति के उपाय निकालना तो और भी आसान है; परन्तु यह देख कर और भी दुःख होता है कि इतनी आसानी होने पर भी कुछ नहीं किया गया।

अब से कुछ दिनों पहले तक काफ़ी बड़ी संख्या में अण्डे हिन्दुस्तान से लङ्का और बर्मा को भेजे जाते थे; मगर पिछले सात वर्षों में २३६ लाख अण्डे ही हिन्दुस्तान से बर्मा को गए। पहले इससे दुगने जाते थे और इनकी क़ीमत भी घट कर लगभग एक तिहाई या पौने चार लाख रुपये रह गई है। हिन्दुस्तान से लङ्का को पहले ११५ लाख अण्डे जाते थे। अब २.२ लाख ही जाते हैं और क़ीमत ३¾ लाख रुपये से गिर कर सिर्फ़ ४६०० रुपये रह गई है। इसका बड़ा कारण यह है कि जुलाई सन् १९३४ से लंका की सरकार ने हिन्दुस्तान से लंका भेजे जाने वाले अण्डों पर ३ रुपया सैकड़ा महसूल लगा दिया है। पहले क़ीमत पर १२¼ सैकड़ा महसूल लगता था।

बन्दरगाहों से जहाज़ों वाले अपनी आवश्यकता के लिये हर साल लगभग ४२ लाख अण्डे ले जाते हैं। जहाज़ों को अण्डे सप्लाई करने का यह काम अभी और भी बढ़ सकता है।

बाहर से अण्डे और अण्डे की बनी हुई दूसरी चीज़ें नाम मात्र को ही आती हैं, परन्तु इसके विरुद्ध हिन्दुस्तान में अण्डों की सप्लाई की हालत को देखने से पता चलता है कि हिन्दुस्तान से बाहिरी देशों को अण्डे भेजने का व्यापार ख़ूब चल सकता है और अण्डों की बनी हुई वस्तुएँ जैसे बर्फ़ में जमे हुए अण्डे या सुखाए हुए अण्डे इत्यादि बाहर भेजे जा सकते हैं। इस लिए प्रबन्ध से काम हो और पैदावार बढ़ाई जाए तो कुछ विशेष इलाक़ों में यह काम बड़ी आसानी से चालू किया जा सकता है।

पहिले अध्याय की व्याख्या

चित्र १ और २। देसी और विलायती मुर्गियों की विशेष विशेष नस्लें कौन सी हैं और उनके सम्बन्ध में क्या क्या बातें जाननी चाहियें ?

देसी मुर्गियों की विशेष विशेष नस्लें असील, चिटागाँग, टेनी, कड़कनाथ, घाघास और लोलाब हैं और विलायती मुर्गियों की (जो हिन्दुस्तान में पाली जाती हैं) व्हाइट लेगहार्न, ब्लैक माइनोर्का, रोड आइलैंड रैडस, आस्ट्रोलोरप्स, लाइट ससैक्स, विन्डोट्सविट और पिन्गटंस हैं। गांवों की देसी मुर्गी छोटी होती है और इसका वज़न ३ पौंड (लगभग १½ सेर) होता है। इसके रंगों में कई रंगों का मेल होता है। यह एक साल में औसतन ५२ अण्डे देती है और औसतन इसके एक अण्डे का वजन डेढ़ औंस होता है। विलायती मुर्गी अधिकतर सरकारी या प्राइवेट फार्मों में पाली जाती है। यह ज्यादा बड़ी होती है और इसके अण्डे भी बड़े होते हैं। विलायती मुर्गी एक साल में औसतन १०३ अण्डे देती है और इसके एक अण्डे का वजन २ औंस होता है।

चित्र ३ और ४। मुर्गियों के अतिरिक्त और कौन कौन से पक्षी अंडे दिलवाने के लिए पाले जाते हैं और वे कहाँ कहाँ पाले जाते हैं ?

देसी और विलायती मुर्गियों के अतिरिक्त छोटी बड़ी बत्तखें, हंस, पीलू और गिनीफाउल भी पाले जाते हैं। इनके अण्डों को या तो अण्डों के मालिक स्वयं ही खा पी लेते हैं या बेच डालते हैं। बत्तखें जल, कीचड़ और दलदली ज़मीन को बहुत पसन्द करती हैं और ये ऐसे ही इलाक़ों में पाली भी जाती हैं जहाँ यह वस्तुएँ होती हैं जैसे बङ्गाल, मद्रास, रियासत ट्रावन्कोर, और बर्मा का निचला भाग। कहा जाता है कि मुर्गियों के मुकाबिले बत्तखें बहुत कम बीमार होती हैं। बड़ी बत्तखें बंगाल में और गिनीफाउल सहारनपुर और इलाहाबाद में पाए जाते हैं। पीलू संयुक्त प्रान्त और रियासत ट्रावन्कोर ही में मिलते हैं।

शक्ल १ और २। किन किन मौसमों में पक्षी अण्डे अधिक देते हैं ?

हिन्दुस्तान के अधिक भागों में मुर्गियाँ मार्च और अप्रैल के महीने में अधिक अण्डे देती हैं। बरसात के मौसम में मुर्गियाँ कमसे कम अण्डे देती हैं। बत्तखें अगस्त और सितम्बर के महीनों में ज्यादा से ज्यादा और जनवरी और फ़रवरी के महीनों में बहुत थोड़े अण्डे देती हैं।

चित्र नं० १

देशी मुर्ग़ा और मुर्ग़ी
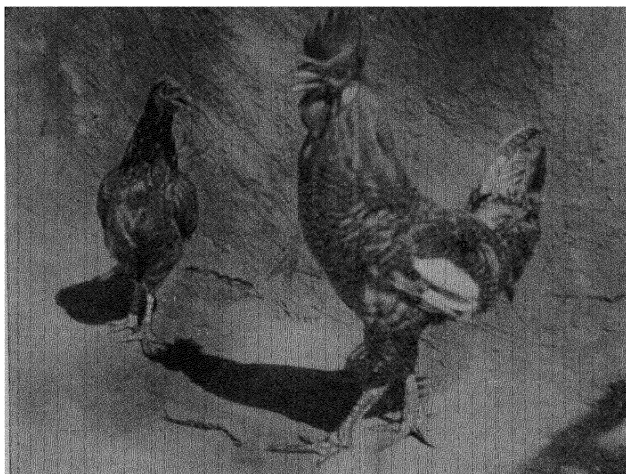
चित्र नं० २

विलायती मुर्ग़ियाँ

पैदावार के एक ख़ास हिस्से में २००० बतख़ों का झुन्ड
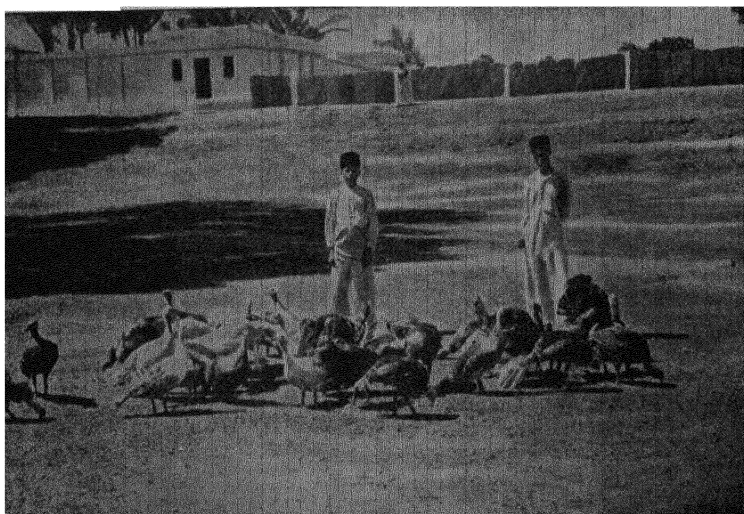
पिलूओं का एक झुन्ड

शक्ल नं० १

भिन्न भिन्न महीनों में देसी मुर्गियों के अन्डे देने का हिसाब

शक्ल नं० २
भिन्न भिन्न महीनों में विलायती मुर्ग़ियों के अन्डे देने का हिसाब
बम्बई
२६० मुर्ग़ियाँ
कोचीन
२६ मुर्ग़ियां
मद्रास
३४ मुर्ग़ियां
संयुक्त प्रान्त
२४ मुर्ग़ियां
बिहार
४२ मुर्ग़ियां
बंगाल
५८ मुर्ग़ियां
अण्डे
प्रति
मास
ज फ म अ म ज ज अ स ओ न द
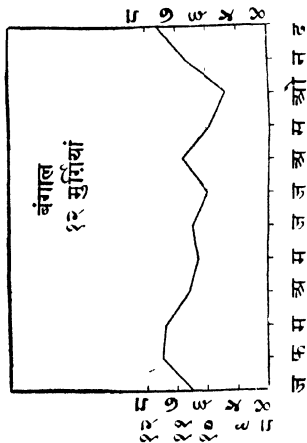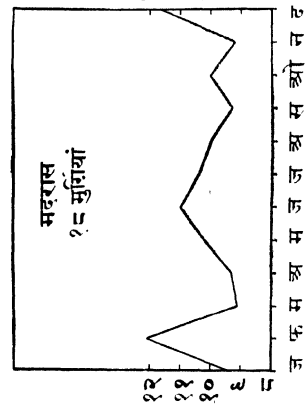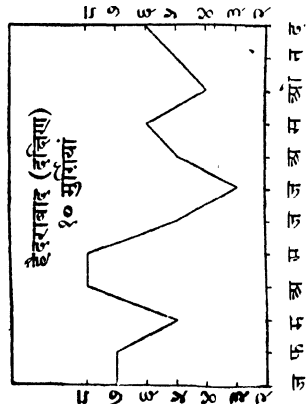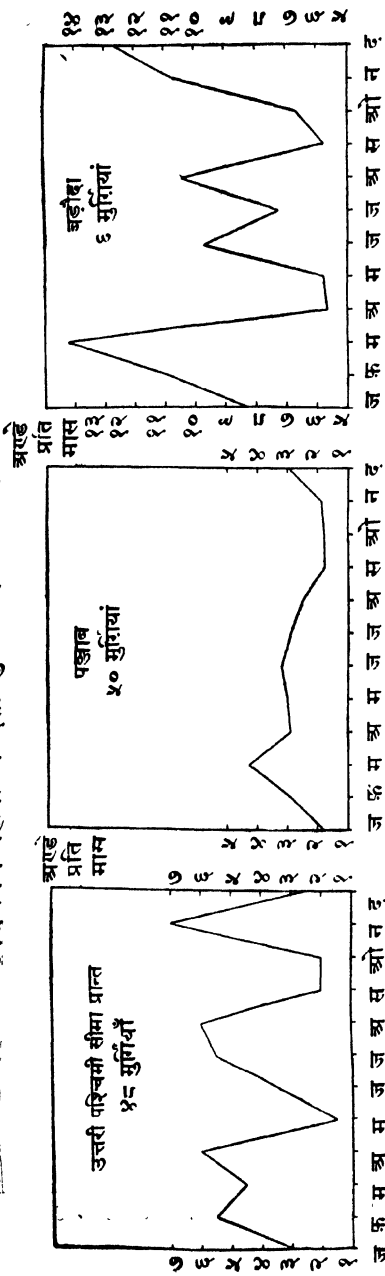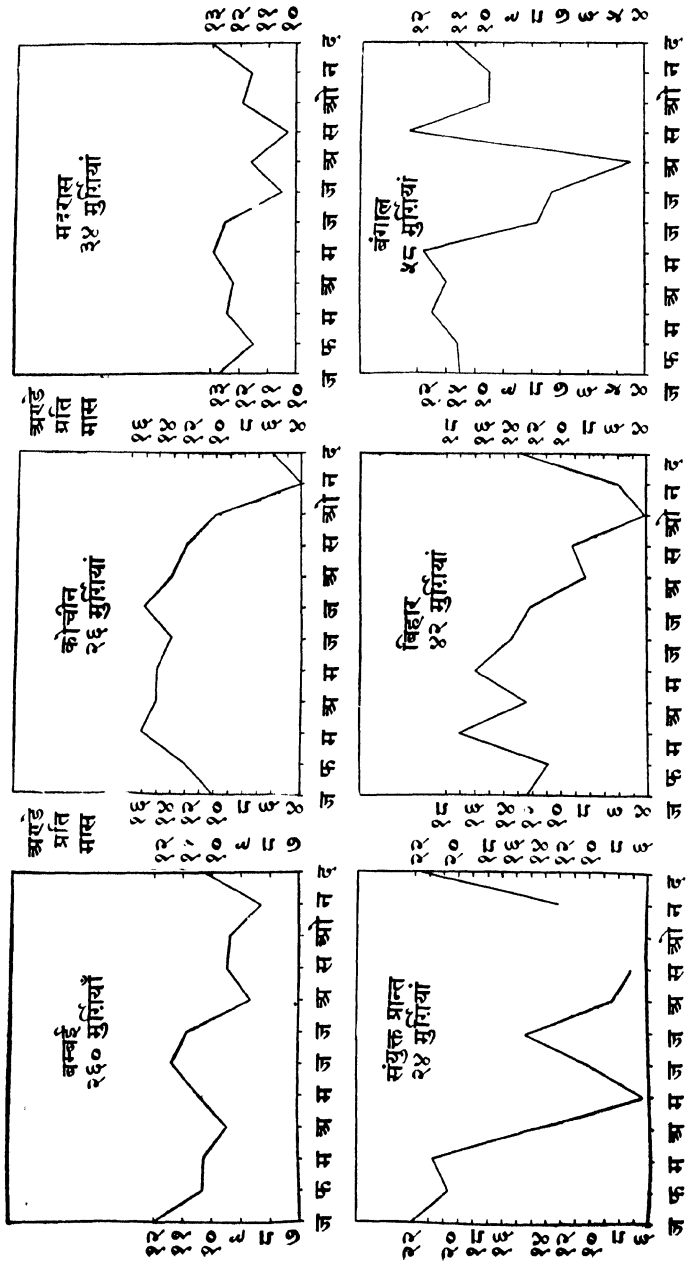
नक़शा १ और २ शकल ३ | **हिन्दुस्तान के किन किन इलाक़ों में सब से अधिक अण्डे पैदा होते हैं ?**

मुर्ग़ी के अण्डे दक्षिण-पूर्वी बंगाल, मद्रास, गोदावरी नदी के डेल्टे, रियासत हैदराबाद के जिले अतराफ़ बल्दा, रियासत कोचीन, रियासत ट्रावन्कोर, और बम्बई प्रेजिडेन्सी के जिले थाना में बहुत ज्यादा होते हैं। बत्तख़ के अण्डे समुद्र तट के दक्षिणी सिरे को छोड़ कर शेष सारे तट के इलाक़े में पूर्वी तट तक बहुत ज्यादा होते हैं और पूर्वी बंगाल, मलाबार और ट्रावन्कोर के बीचों-बीच के इलाक़े में तो अण्डे विशेष रूप से अधिक मात्रा में होते हैं।

शक्ल ४ | **हर क़िस्म के कितने कितने अण्डे पैदा होते हैं और फिर उनका क्या किया जाता है ?**

देसी मुर्गियाँ हर साल लगभग २७३७८ लाख अण्डे देती हैं। यह संख्या हिन्दुस्तान में पैदा होने वाले कुल अण्डों के तीन-चौथाई भाग से कुछ अधिक है। बत्तख़ के अण्डे कुल संख्या का छटा भाग है और विलायती मुर्गियों के अण्डे चालीसवाँ भाग है। बर्मा की बत्तख़ के अण्डे ख़ासे बड़े होते हैं। वहाँ कुल १६३६ लाख अण्डे होते हैं। इनमें से तीन-चौथाई बत्तख़ के अण्डे होते हैं। नीचे दिये हुए नक़्शे से मालूम हो जायगा कि बर्मा और हिन्दुस्तान में अण्डों का क्या किया जाता है।

	खाने के लिये रोके जाते हैं। कुल संख्या का प्रतिशत भाग	बच्चे निकलवाने के लिये रोके जाते हैं। कुल संख्या का प्रतिशत भाग	बेचे जाते हैं। कुल संख्या का प्रतिशत भाग
(१) हिन्दुस्तानः—			
देसी मुर्ग़ियों के अण्डे	२०.३	२०.१	५६.६
विलायती मुर्गियोंके अण्डे	१६.६	११.८	७१.३
बत्तख़ के अण्डे	७.२	६.३	८३.५
छोटी-बड़ी बत्तख़ों के अण्डे	११.३	७२.३	१६.४
पीलू के अण्डे	२.२	७८ ६	१८.६
गिनीफाऊल के अण्डे	६ ५	४७.६	४२.६
(२) बर्मा :—			
देसी अण्डे	६.१	६०.६	३३.०
विलयाती मुर्ग़ी के अण्डे	७.७	८ २	८४.१
बत्तख़ के अण्डे	०	२.५	६७.५

बहुत से अण्डे तो इकट्ठे करने वालों के हाथ ही नहीं लगते। वे इकट्ठे होने से पहले ही नष्ट हो जाते हैं। इसका सब से बड़ा कारण यह है कि मुर्गियों के लिये अच्छे दरबों का प्रबन्ध नहीं किया जाता। कुछ अण्डे इस तरह भी नष्ट हो जाते हैं कि पक्षी इधर उधर अण्डे दे आते हैं। कुछ अण्डे कौवे, चीलें और बिल्लियाँ खा जाती हैं। इस तरह हर साल हिन्दुस्तान में ८३७ लाख और बर्मा में ७३ लाख अण्डे इकट्ठे न होने के कारण १४ लाख रुपये का घाटा होता है। यदि गाँवों में अच्छे दरबे बनाए जाएँ और उनमें तार की जालियाँ लगाई जाएँ तो व्यापार को इस हानि से बचाया जा सकता है। इस बात की कोई आवश्यकता नहीं कि दरबे अधिक लागत ही के बनाए जाएँ। जिन वस्तुओं का ग्रामों में प्रबन्ध हो सकता है वही काम में लाई जाएँ।

नक्शा नं० १

हिन्दुस्तान का नक़्शा जिस से बतख़ के अण्डों की पैदावार का हाल मालूम होता है। एक नुक़्ता २ लाख अण्डों की सालाना पैदावार को बताता है ।
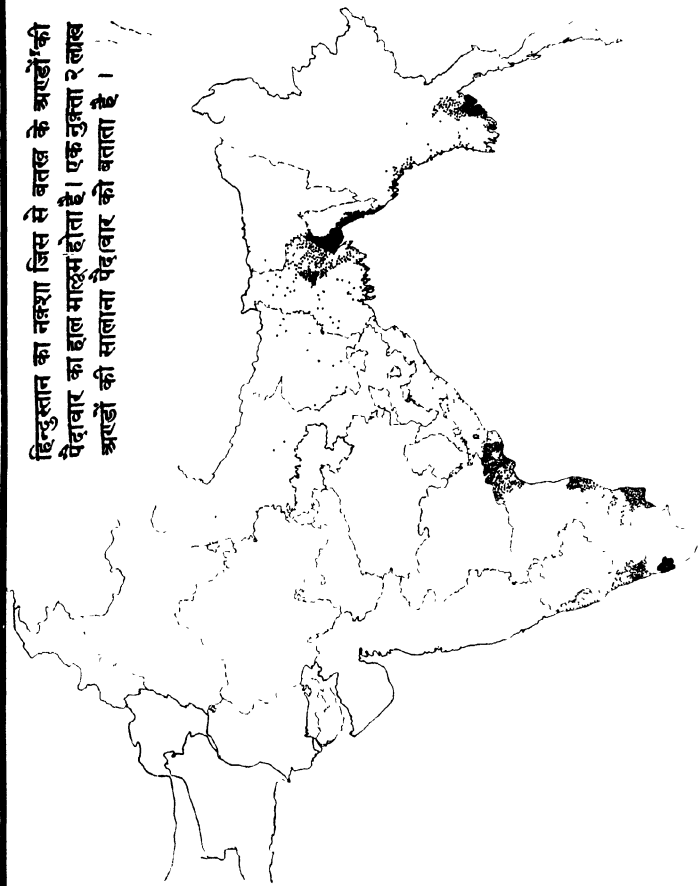
नक्शा नं० २

हिन्दुस्तान का नक़्शा जिससे मुर्ग़ी के अण्डों की पैदावार का हाल मालूम होता है। एक नुक़्ता २ लाख अण्डों की सालाना पैदावार को बताता है
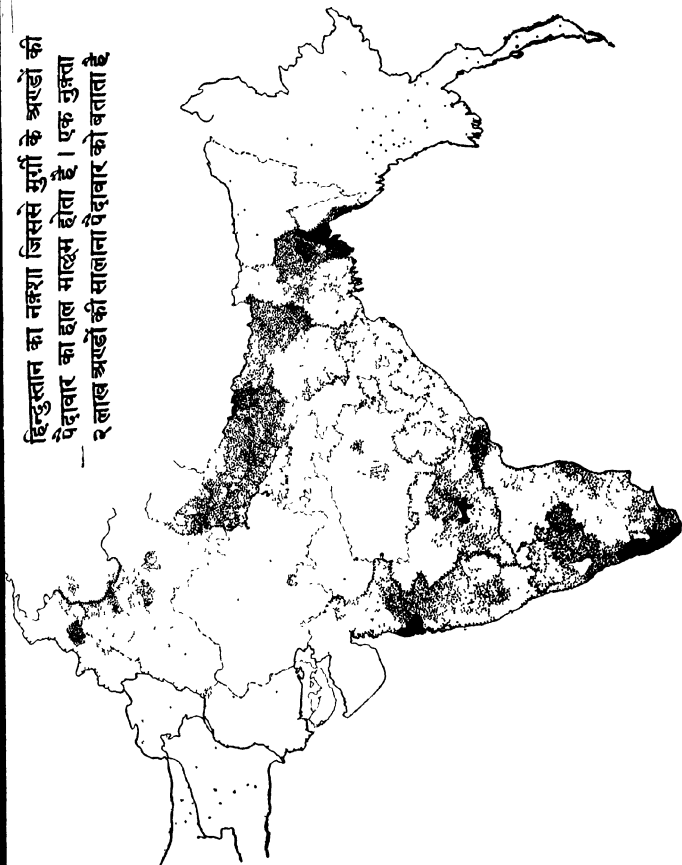
शक्ल नं० ३

अन्डों की वार्षिक पैदावार
(प्रान्त)
बतख़ के अन्डे
मुर्ग़ी के अन्डे
लाख
मदरास
बंगाल
संयुक्त प्रान्त
बम्बई
बिहार
पंजाब
मध्य प्रान्त
उत्तरी पश्चिमी सीमा प्रान्त
ओड़ीसा
आसाम
सिंध
बरमा
(रियासतें)
हैदराबाद (दक्षिण)
ट्रावनकोर
मैसूर
पूर्वी रियासतें
काश्मीर
राजपूताना
कोचीन
दूसरी रियासतें

शक्ल नं० ४
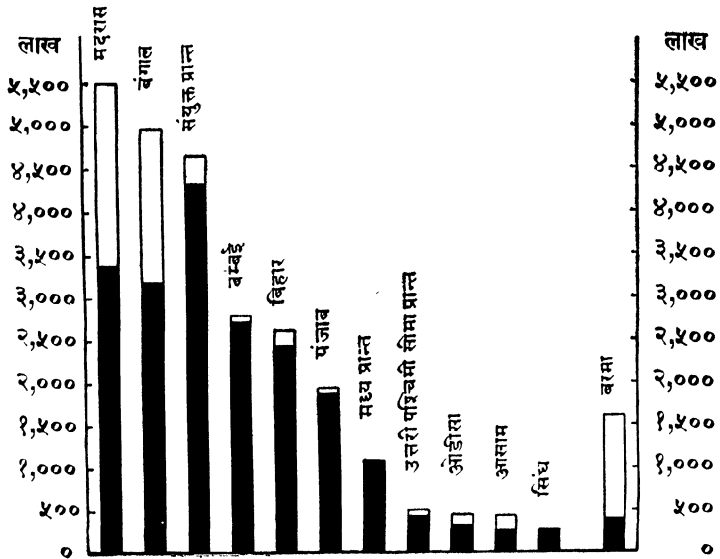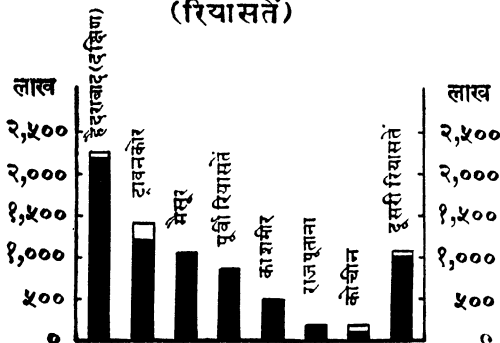
अन्डो की वार्षीक पैदावार और उनकी तक़सीम

हिन्दुस्तान

देशी मुर्ग़ी के अण्डे
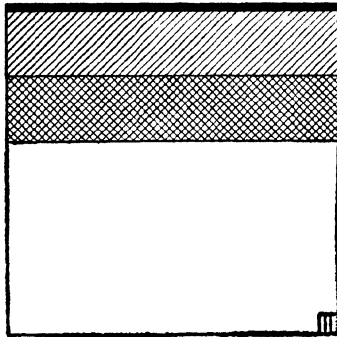
बतख़ के अण्डे

विलायती मुर्ग़ी के अण्डे

पीरू और गिनीफाउल के अण्डे

बरमा
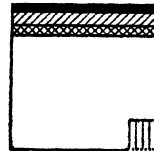
बतख़ के अण्डे

देशी मुर्ग़ी के अण्डे

विलायती मुर्ग़ी के अण्डे

तशरीह

वह अण्डे जो इकट्ठे करने से पहले खराब हो जाते हैं

घर में खाने के काम के लिये रोक लेने वाले अण्डे

वह अण्डे जो बाहर से मंगाये जाते हैं

वह अण्डे जो बच्चे निकालने के काम में आते हैं

वह अण्डे जो बाज़ार में बिकने आते हैं

वह अण्डें जो बाहर भेजे जाते हैं

दूसरा अध्याय

खपत और इस्तेमाल

जिन देशों के नागरिक सब्ज़ियों और तरकारियों पर ही गुज़ारा नहीं करते बल्कि दूसरी वस्तुएँ भी खाते हैं, उन में लोग भोजन के साथ प्रतिदिन अण्डे खाते हैं और कुछ देशों में तो प्रत्येक मनुष्य इतने अण्डे खाता है कि वे एक मनुष्य के लिए बहुत अधिक मालूम होते हैं। जैसे ब्रिटेन का एक नागरिक प्रति वर्ष १५४ अण्डे और कैनाडा का प्रत्येक नागरिक प्रति वर्ष २६६ अण्डे खाता है। इस हिसाब से ब्रिटेन में प्रत्येक मनुष्य प्रति दूसरे दिन एक अण्डा खाता है और कैनाडा में प्रत्येक नागरिक इतवार को छोड़ कर प्रतिदिन एक अण्डा खाता है।

भारतवर्ष में अधिकतर नागरिक सब्ज़ियाँ और तरकारियाँ ही खाते हैं। इस देश में तो औसतन प्रति मनुष्य को सारे वर्ष भर में आठ ही अण्डे खाने को मिलते हैं। इस हिसाब से कैनाडा का एक नागरिक प्रति वर्ष इतने अण्डे खा लेता है जितने भारतवर्ष में एक वर्ष में ३०-३५ मनुष्य खाते हैं। यदि भारतवर्ष के सब्ज़ियाँ, तरकारियाँ खाने वालों को न गिना जाए और सिर्फ़ माँस खाने वालों से औसत फैलाई जाए तो यह हिसाब फैलता है कि प्रत्येक नागरिक प्रति वर्ष ८० अण्डे खाता है और गाँव का प्रत्येक मनुष्य प्रति वर्ष २० अण्डे खाता है।

भारतवर्ष की कुल आबादी का दसवाँ हिस्सा ही नगरों में बसता है, किन्तु नगरों और क़स्बों की यही थोड़ी सी आबादी प्रति वर्ष में ६००० अण्डे खा जाती है। यह संख्या अण्डों की कुल पैदावार के चौथाई भाग से अधिक है। जितने अण्डे बाज़ारों में बिकने के लिए आते हैं उन में से आधे से कुछ कम शहरों और क़स्बों ही में खपते हैं। इसलिए अण्डों की बिक्री के मामले में नगरों की माँग को अधिक आवश्यक समझना चाहिए।

ठण्डे और ख़ुश्क मौसम में नगरों में अण्डों की माँग ज़्यादा होती है। नवम्बर और दिसम्बर में यह माँग ज्यादा से ज्यादा हो जाती है। यह पीछे बताया जा चुका है कि मार्च और अप्रैल में अण्डे अधिक होते हैं; इसलिए इन महीनों में दुकानदारों को मुर्ग़ियाँ पालने वालों से अण्डे ज्यादा से ज्यादा सस्ते और सर्दियों में ज्यादा से ज्यादा महँगे मिलते हैं। शहरों में वर्षा ऋतु में जुलाई से सितम्बर तक अण्डे इसलिए महँगे होते हैं कि इन दिनों में ताज़ा अण्डे मुश्किल से मिलते हैं। बहुतसे नगरों में मौसिमी माँग इसलिए भी घट जाती है कि कुछ आबादी इन दिनों प्रति वर्ष पर्वतीय नगरों में चली जाती है। वर्ष के इस भाग में इन पर्वतीय स्थानों में इतनी ही माँग बढ़ जाती है।

अण्डे घरों में खाए पिए जाते हैं या केक, बिस्कुट बनाने वाले उन्हें केक, पेस्टरी इत्यादि में मिलाते हैं या उनसे उद्योग धन्धों की आवश्यकताएँ पूरी होती हैं। अण्डों की कुल पैदावार का ६५ प्रतिशत से अधिक भाग घरों में खाने पकाने के ही काम आ जाता है, परन्तु पकाने का ढङ्ग कुछ ऐसा है कि खाने वाले ताज़े अण्डे का स्वाद कदाचित ही कभी उठाते होंगे। रिवाज यह है कि पहले अण्डों को अच्छी तरह उबालते हैं। फिर उन्हें चावल और माँस इत्यादि के साथ मसाले डाल कर पकाते हैं। लोग आमलेट भी शौक़ से बनाते और खाते हैं, मगर इसमें भी प्याज़ इत्यादि मिला दी जाती है; इसलिए यह स्पष्ट है कि इस देश में इसकी कोई चिन्ता नहीं की जाती कि अण्डा ताज़ा है या नहीं।

आधे उबले और तले हुए अण्डे उन घरों में खाए जाते हैं जिन में अंगरेज़ी ढङ्ग का रहन सहन है। ऐसे घरों में विलायती मुर्ग़ियों के अण्डों अथवा बड़े ताज़ा देसी अण्डों की ही ज्यादा मांग होती है और ऐसे अण्डों के देसी अण्डों से ज्यादा दाम मिलते हैं।

केक, पेस्टरी बनाने में बर्मा के चीनी लोग बत्तख़ के अण्डों से ख़ूब काम लेते हैं। भारतवर्ष के केक, पेस्टरी बनाने वाले इन को हाथ नहीं लगाते। वे समझते हैं कि बत्तख़ के अण्डे इतने हलके नहीं होते जितने मुर्ग़ी के होते हैं और केक का उत्थान हलके अण्डे मिलाने से ही हो सकता है किन्तु प्रयोग करने से मालूम हुआ है कि बत्तख़ का सारा अण्डा न मिला कर सिर्फ़ उसकी ज़र्दी काम में लाई जाए तो इस से भी वही बात पैदा हो जाती है जो मुर्ग़ी का अण्डा मिलाने से होती है। बत्तख़ के अण्डे की सफ़ेदी मर्ज़ीपान और पैरा जैसी विलायती मिठाइयों में काम दे सकती है। अण्डों को केक, पेस्टरी में मिलाने का काम बम्बई में बहुत ऊंचे पैमाने पर होता है। उस स्थान के केक, पेस्टरी बनाने वाले टूटे हुए और टपकते हुए अण्डे भी खपा देते है वरन् वह तो कुछ कुछ सड़े हुए अण्डे भी इस्तेमाल करते हैं। यह लोग बाज़ार के भाव से आधे दामों में ही अण्डे ख़रीद कर काम चला लेने की सोचा करते हैं।

अण्डे किताबों की जिल्दें बाँधने, वस्तुओं को उजालने और चमकाने, दवाइयाँ तैयार करने और खालें साफ़ करने के काम भी आते हैं, किन्तु इन कामों में बहुत थोड़े अण्डे खपते हैं। अण्डों की ज़र्दी या सफ़ेदी को सुखा कर या बर्फ़ में जमा कर बेचने का कारबार भारतवर्ष में अभी तक चालू नहीं हुआ है। अण्डों की बनाई हुई यह वस्तुएं इस समय संसार के भिन्न भिन्न देशों में जितनी मात्रा में भी खपती हैं वे लगभग सभी चीन से भेजी जाती हैं; किन्तु जाँच करने से यह पता चला है कि भारतवर्ष में और विशेष रूप से बङ्गाल और कोचीन ट्रावन्कोर में यह काम चालू कर दिया जाए तो इन इलाक़ों के बसने वालों के

लिए लाभदायक कारोबार बन जायगा। अन्दाज़ा यह है कि भारतवर्ष से जमाए हुए अण्डे लन्दन भेजें तो चीन के इस क़िस्म के माल के मुक़ाबले में भारतवर्ष में मुर्ग़ी के अण्डों पर ५० से ६० रुपये टन तक और बत्तख़ के अण्डों पर २५३ से २७० रुपये प्रति टन तक कम ख़र्च होगा (टन=२७ मन बङ्गाली) जिन इलाक़ों का ऊपर वर्णन हुआ है उनमें व्यापारिक ढङ्ग पर कारख़ाने चलाने के लिए काफ़ी मात्रा में अण्डे मिल सकते हैं और यदि बाज़ार के देशों की माँग बढ़ेगी तो इन दोनों इलाक़ों में अण्डों का व्यापार अधिक शीघ्रता से उन्नति करेगा।

आजकल हिन्दुस्तान से बर्मा और लङ्का को उतने अण्डे नहीं जाते जितने पहले जाया करते थे। माँग घट गई है। इस बात की आवश्यकता है कि अन्य देशों में हिन्दुस्तानी अण्डों की माँग बढ़ाने की तदबीरें की जाएं। एक उपाय तो यही है कि अण्डों के पारसल बाहर भेजे जाएं और अन्दाज़ा किया जाए कि खपत का क्या रङ्ग रहता है। इस उपाय को आज़मा कर देखने के लिये पहले ही अण्डों के पारसल अन्य देशों में भेजे जा चुके हैं। खपत का ढङ्ग देखने से यह मालूम हुआ है कि अन्य देशों में हिन्दुस्तानी अण्डों की माँग बढ़ाने और इस व्यापार की उन्नति देने के लिए ऐसे और पारसल भी बाहर भेजने चाहिये।

दूसरे अध्याय की व्याख्या

शक्ल ५ | अण्डों की मांग में उत्तार चढ़ाव कैसे होता है ?

बड़े बड़े नगरों में आने वाले पारसलों से अण्डों की माँग का अन्दाजा लगाया जाता है। मांग अप्रैल के महीने में घटती है और मई में कम से कम होती है और फिर धीरे धीरे सितम्बर के महीने तक बढ़ती है। अक्तूबर में शीघ्रता से बढ़ती है और दिसम्बर में ज्यादा से ज्यादा बढ़ जाती है। इस समय मई से तिगनी माँग होती है।

चित्र ५ और ६ | मुर्गी के अण्डों के केक और बत्तख़ के अण्डों के केक में क्या अन्तर होता है ?

बत्तख़ के अण्डे का केक मुर्गी के अण्डे के केक जितना ऊंचा नहीं उठता दोनों के स्वाद में तो कोई अन्तर नहीं होता परन्तु बत्तख़ के अण्डे का केक बनावट और शक्ल सूरत में मुर्गी के अण्डे के केक जैसा नहीं होता। उस में बड़े बड़े छेद रह जाते हैं ; किन्तु यह भी देखा गया है कि यदि केक में बत्तख़ के अण्डे की सिर्फ़ ज़र्दी मिलाई जाए तो उत्थान, बनावट और आकृति में वही बात पैदा हो जाती है जो मुर्गी के अण्डे के केक में होती है।

———

शक्ल नं ५

अण्डों की मासिक आमद में उतार चढ़ाव
मासिक आमदनी
वार्षिक आमदनी
की क्या प्रतिशत है
उत्तरी भारत के ३ पहाड़ी मुक़ामात पर
मैदानी इलाकों के २७ शहरों में
जनवरी फरवरी मार्च अप्रैल मई जून जोलाई अगस्त सितम्बर अक्टूबर नवम्बर दिसम्बर
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५
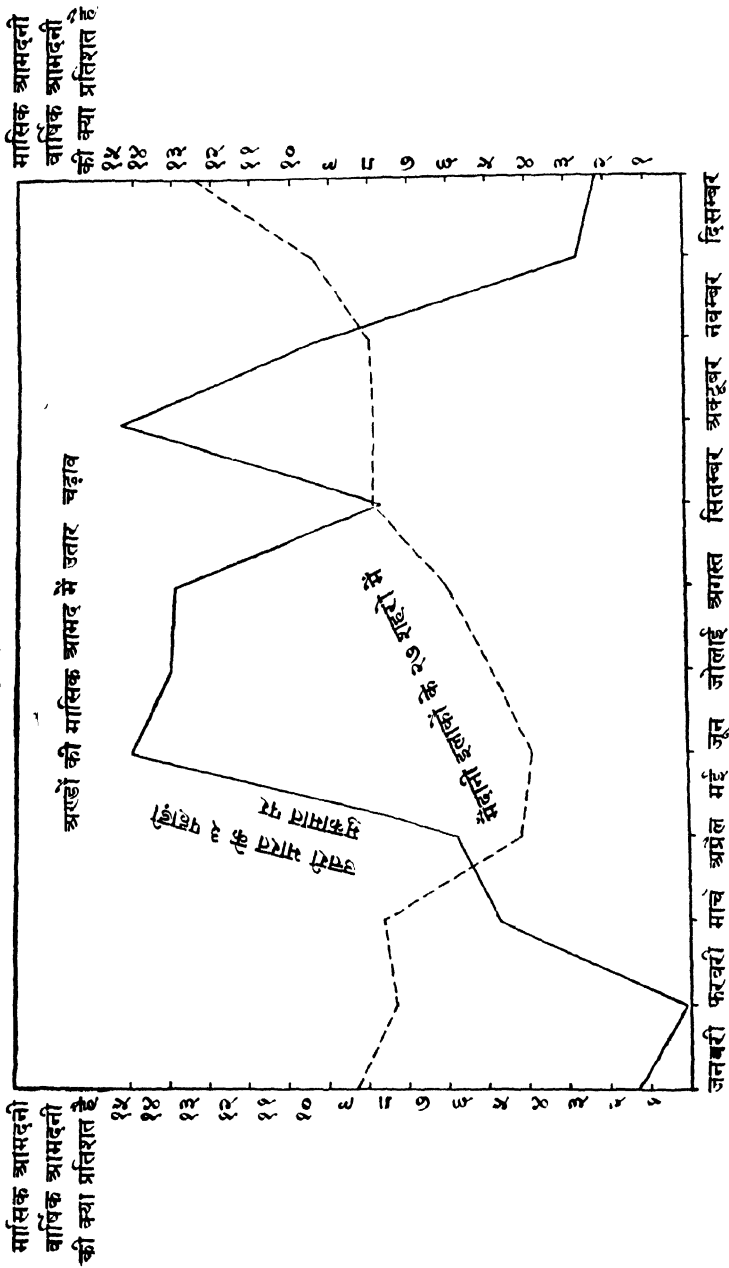
चित्र नं० ६

बत्तख़ के अण्डों का केक　　　　मुर्ग़ी के अण्डों का केक

बराबर मिकदार के मुर्ग़ी और बत्तख़ के अण्डों से बनाये हुऐ केक

चित्र नं० ६
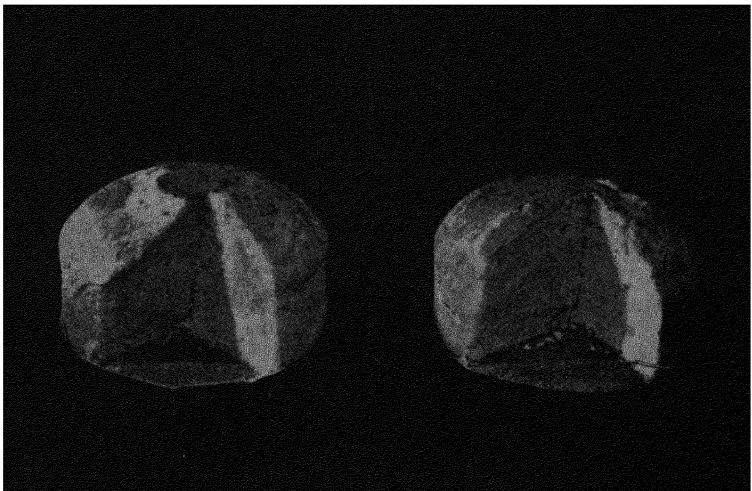
जिस में बत्तख़ के अण्डों की ज़रदी मिलाई गई　　　　जिस में मुर्ग़ी के अण्डों की ज़रदी मिलाई गई

बराबर मिकदार की मुर्ग़ी और बत्तख़ के अण्डों की ज़रदी से बनाये हुऐ केक

तीसरा अध्याय

अण्डों का मूल्य

सन् १९२९ ई० से सन् १९३५ ई० तक अण्डों के दाम गिरते रहे और सन १९३५ ई० तक ४ प्रतिशत गिर गए। इसके पश्चात् दो वर्षों में ५ अथवा ६ प्रतिशत दाम बढ़े और इस समय दाम पिछले महायुद्ध (सन् १९१४ ई०) से पूर्व के दामों से २० प्रतिशत अधिक हैं। इससे यह पता चला कि भारतवर्ष में मुर्ग़ियाँ पालने वाले उन लोगों से फिर भी अच्छे रहे जो खेती-बाड़ी की दूसरी वस्तुओं का व्यापार करते हैं।

अण्डों के दाम नियुक्त करने के मामले में हर जगह का अपना अलग ढङ्ग है। फुटकर बेचने वाले दर्जन के हिसाब से दाम बताते या नियुक्त करते हैं, किन्तु बङ्गाल और आसाम में फुटकर वाले कोड़ी (२०) के हिसाब से बेचते हैं। अण्डे इकट्ठे करने वाले और थोक बेचने वाले सैंकड़ा या हज़ार के हिसाब से बेचते हैं, किन्तु मुर्ग़ियाँ पालने वाले इस हिसाब से भी बेचते हैं कि एक रुपये के इतनी मुट्ठी अण्डे (एक मुट्ठी = ८ अण्डे) या एक जोड़ा इतने पैसों का या एक आने में इतने अण्डे। कहीं कहीं चार, बारह या बीस अंडे भी बेचे जाते हैं।

इसलिए भिन्न भिन्न स्थानों के दामों का एक दूसरे से मुक़ाबला करना आसान नहीं है। इस के अलावा जब यह हिसाब लगाया जाता है कि मुर्ग़ियाँ पालने वाले से लेकर दुकानदार तक किस किस को क्या क्या मिला तो उस समय टूटे हुए और ख़राब अन्डों का भी लिहाज रखा जाता है जो अच्छे अन्डों से सस्ते बेचे जाते हैं। बस यह समझ लेना चाहिये कि मुर्ग़ियाँ पालने वालों को एक अन्डे का एक पैसा या चार अन्डों का एक आना मिलता है।

अण्डे खाने वाले अन्डों के जितने दाम देते हैं उन में से ४० प्रतिशत बीच वाले ले लेते हैं। यदि एक रुपये के अन्डे बिकते हैं तो मुर्ग़ियाँ पालने वालों को उस में से मुर्ग़ी के अन्डों में ९ आने से कुछ ज़्यादा और बत्तख़ के अण्डों में फुटकर दामों का दो-तिहाई भाग मिल जाता है। कुछ बड़े बड़े नगरों में जहाँ अन्डों की खपत ज़्यादा है थोक के व्यापारी छाँट कर छोटे बड़े अन्डे अलग अलग कर लेते हैं और बड़े अन्डे छोटे अन्डों से महंगे बेचते हैं, इस से एक दर्जन पर एक आना अधिक मिलता है। चटख़े हुए या वे अण्डे जिन्हें लेने से ग्राहक इन्कार करता है आधे से भी कम दामों में बेच दिये जाते हैं, किन्तु साधारणतया छोटे बड़े अन्डों के एक ही दाम नियुक्त किए जाते हैं। इस में वे लोग घाटे में रहते हैं जिन के यहाँ बड़े अन्डे होते हैं।

सरकार के क़ानून, ऐग्रिकलचरल प्रोडयूस, ग्रेडिङ्ग ऐन्ड मार्किङ्ग ऐक्ट सन् १९३७ ई० के मातहत ग्रेड किए हुए (अलग अलग श्रेणियों में बाँटे हुए) अण्डों पर ग्रेड न किए हुए अण्डों के मुक़ाबले में २० प्रतिशत अधिक लाभ हुआ, परन्तु 'ए ग्रेड' (वज़न पौने दो औंस) और 'सी ग्रेड' (वज़न सवा औंस) में चार ही आने का अन्तर हुआ। वज़न और ख़ुराक के अन्तर को देखते हुए 'ए ग्रेड के अण्डों पर इतना लाभ नहीं हुआ जितना होना चाहिये था। विलायती मुर्ग़ी के अण्डों पर लाभ प्राप्त करना और भी ज्यादा कठिन है क्योंकि फुटकर बिक्री में विलायती मुर्ग़ियों के अन्डे ११३ आने दर्जन ही बिक सकते हैं। इस से यह पता चला कि ऐसे अण्डे अभी और भी अधिक संख्या में बाज़ारों में भेजने की आवश्यकता है जिन्हें ग्रेड कर लिया गया हो ताकि अण्डे सिर्फ़ गिनती से नहीं बल्कि वज़न के हिसाब से बिकें। अण्डों की पहचान रखने वाले ग्राहकों के लिए यह समझना कुछ कठिन न होगा कि हमें एक दर्जन बड़े अण्डों के एक दर्जन छोटे अण्डों से अधिक दाम देने पड़ते हैं; परन्तु वज़न में हमें बड़े अण्डे तीसरे ग्रेड के अण्डों से भी अधिक सस्ते मिल रहे हैं।

मुर्ग़ी के अण्डों के भाव में २० प्रतिशत और बत्तख के अण्डों के भाव में इससे कुछ कम मौसमी उतार चढ़ाव होता है। औसतन मार्च के महीने में अण्डे ज्यादा से ज्यादा सस्ते और जाड़े के महीनों में ज्यादा से ज्यादा महँगे होते हैं। किन्तु यह भी याद रखना चाहिये कि जुलाई के महीने में अंडों के दाम ज्यादा से ज्यादा चढ़ जाते हैं। कारण यह कि इस महीने में दुकानदारों को अण्डे मुश्किल से मिलते हैं। बत्तख़ के अण्डे अप्रैल में ज्यादा से ज्यादा सस्ते और जून और अक्तूबर में ज्यादा महँगे होते हैं; किन्तु प्रत्येक ज़िले में यह उतार चढ़ाव एकसा नहीं होता। गुजरात (बम्बई) में मुर्ग़ी के अण्डे फ़रवरी के महीने में ज्यादा से ज्यादा सस्ते होते हैं लेकिन पञ्जाब और मद्रास में जून में भाव ज्यादा से ज्यादा गिरा हुआ होता है। सीमा प्रान्त में जनवरी में, कोचीन और बङ्गाल में सितम्बर में, और देहली और रियासत हैदराबाद में दिसम्बर में अंडों का भाव बढ़ जाता है।

भाव का मौसमी उतार चढ़ाव सब जगह एक सा न होने के फलस्वरूप अण्डे बेचने वालों के लिए आवश्यक हो जाता है कि वह उन जगहों के भावों के उतार चढ़ाव के समाचार प्राप्त करते रहें जहाँ कि अण्डों की खपत ज्यादा होती है ताकि माल उसी स्थान पर भेजें जहाँ ज्यादा से ज्यादा लाभ हो। इस समय हालत यह है कि प्रतिदिन दस या बारह प्रतिशत उतार चढ़ाव होता रहता है। इससे या तो माल शीघ्रता से आने लगता है अन्यथा आना रुक जाता है और कारबार का रुख़ एकाएकी एक जगह से दूसरी जगह की ओर फिर जाता है जिससे ग्राहकों और दुकानदारों दोनों को हानि होती है; इसलिए अण्डों

के बाज़ारों के समाचार और भी अधिक अच्छे ढङ्ग से लोगों तक पहुँचाने चाहिएँ और इसी के साथ साथ अण्डे बर्फ़ में रखने का तरीक़ा व्यवहार में लाकर आमद पर भी क़ाबू हासिल किया जा सकता है।

किसी क़िस्म की सेन्ट्रल ब्यूरो या प्रबन्धक श्रेणी बना लेने से लाभ होगा। यह अण्डों की सप्लाई और उनके भाव के समाचार ग्राहकों और दुकानदारों तक पहुँचाया करे और यदि हो सके तो एक स्थान की सप्लाई का दूसरे स्थान की सप्लाई से सम्बन्ध भी पैदा करे। इस कार्य को उस समय तक रोके रखना होगा जब तक कि देश भर में अण्डों को ग्रेड करने के स्टेशन न खुल जाएँ। ऐसे स्टेशन खुल जाने के पश्चात इङ्गलैंड की एग सेन्ट्रल (Egg Central) नामक श्रेणी जैसी एक श्रेणी भारतवर्ष में भी बनाई जा सकेगी। इङ्गलैंड की इस सभा में वहाँ के नेशनल मार्क पैकिङ्ग स्टेशन सम्मिलित हैं। भारतवर्ष में ऐसी सभा उन कम्पनियों और फ़र्मों के लिए भी लाभदायक होगी जो बर्फ़ में रखे हुए अण्डों का व्यापार करना चाहती हों।

तीसरे अध्याय की व्याख्या

शक्ल ६। मुर्गी के अंडों के थोक मूल्यों का क्या हाल रहा है ?

सन १६३७ ई० के भाव का सन् १६३१ ई० के भाव से मुक़ाबला करने से यह पता चला है कि गुजरात (बम्बई) में भाव सब से ज्यादा गिरा। वहाँ ८ रुपये ८ आने हज़ार की कमी हुई। कोचीन और ट्रावन्कोर में ४ रुपये ७ आने और सीमा प्रान्त में २ रुपये ८ आने हज़ार की कमी हुई। दक्षिणी मद्रास में २ रुपये की कमी हुई, परन्तु बङ्गाल में भाव सिर्फ़ १४ आने हज़ार गिरा।

शक्ल ७। बत्तख़ के अंडों के थोक भाव का क्या हाल रहा है ?

शक्ल देख कर मालूम किया जा सकता है कि पिछले चार पांच वर्षों में बत्तख़ के अण्डो के दाम चढ़े हैं, किन्तु सन १६३७ ई० के दाम सन् १६३१ ई० के दामों से फिर भी कम हैं।

शक्ल ८। मासिक मूल्य में उतार चढ़ाव कैसे होता है ?

मार्च और अप्रैल में अण्डे ज्यादा से ज्यादा सस्ते होते हैं। जुलाई और इसके पश्चात् दिसम्बर में वह ज्यादा से ज्यादा मँहगे होते हैं; किन्तु मुर्गी और बत्तख़ दोनों के सस्ते और महँगे दामों में सिर्फ़ १८ प्रतिशत का अन्तर होता है जो एकसा रहता है।

शक्ल ९। मुर्गी के अण्डों के मूल्य में साप्ताहिक उतार चढ़ाव कैसे होता है ? इसे रोकने के लिए क्या क्या तरकीबें करनी चाहिएँ?

अण्डों के साप्ताहिक मूल्य में बराबर उतार चढ़ाव होता रहता है। अण्डे बर्फ़ में रखने की आसानियाँ न होने के कारण प्रतिदिन की माँग और सप्लाई में थोड़ा सा अन्तर पड़ जाने पर भी मूल्य में उतार चढ़ाव होने लगता है। कभी कभी तो एक ही बाज़ार के दो दुकानदार एक ही क़िस्म के अण्डे दो भावों से बेचते हैं। यदि व्यापार में यह तरीक़ा बरता जाने लगे कि अण्डों की अच्छाई बुराई का एक पैमाना नियुक्त करके उसके अनुसार दाम नियुक्त किए जाया करें (जैसे अण्डों के ग्रेड के अनुसार) और यदि अण्डों को बर्फ़ में रखने का प्रबन्ध हो जाए तो भाव में उतार चढ़ाव होने का खटका जाता रहेगा।

शक्ल नं० ६

पैदावार के बडे २ इलाकों में मुर्गी के
अन्डे की थोक कीमतों का
उतार चढाव
की० फी हज़ार
रुपयों में
फी हज़ार
रुपयों में
उ. प. सीमा प्रान्त
गुजरात (बम्बई प्रेसीडेन्सी)
पूर्वीय बंगाल
दक्षिणी मदरास
ट्रावनकोर और कोचीन
औसत
४२
४१
४०
३९
३८
३७
३६
३५
३४
३३
३२
३१
३०
२९
२८
२७
२६
२५
२४
२३
२२
२१
२०
१९
१८
१७
१६
१५
१४
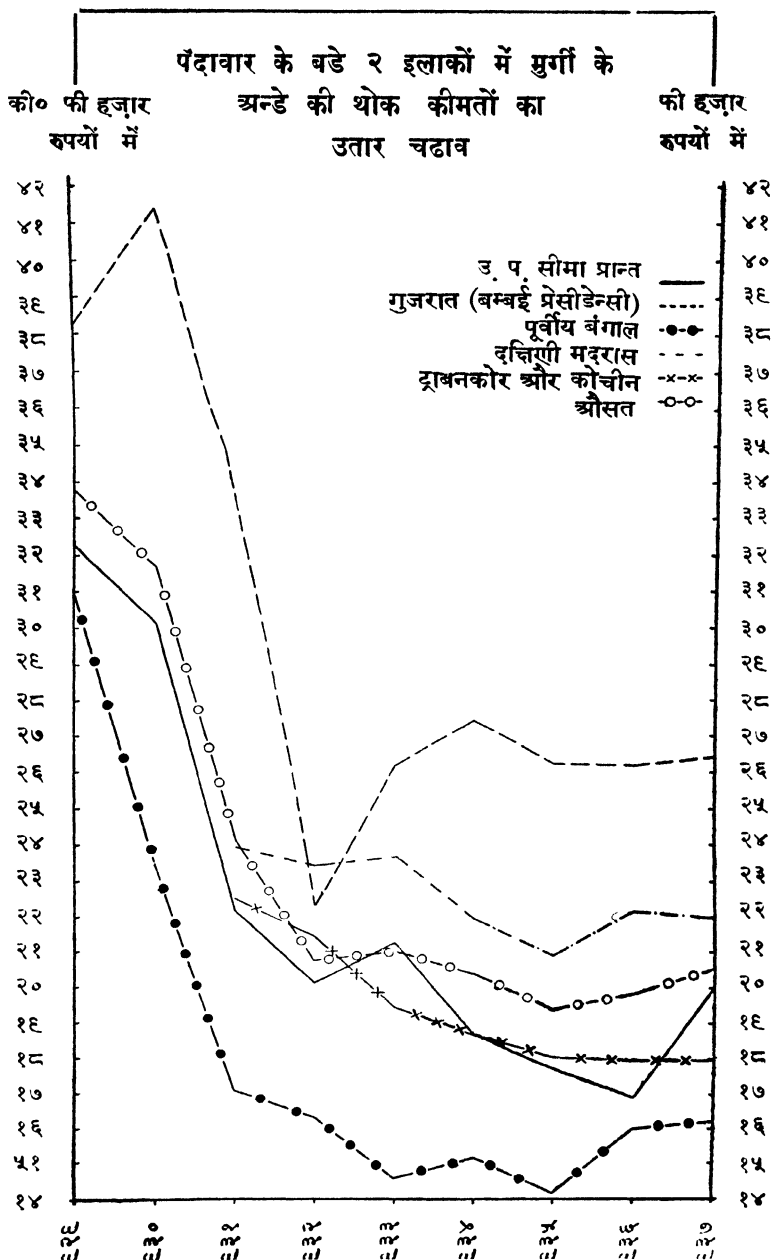
शक्ल नं० ७

पैदावार के बड़े बड़े इलाक़ों में बतख़
के अन्डों की थोक क़ीमतों
का उतार चढ़ाव
की-की हज़ार
रुपयों में
की-की हज़ार
रुपयों में
पूर्वीय बंगाल
दच्छिनी मदरास
ट्रावनकोर और कोचीन
औसत (भारत)
बरमा का निचला हिस्सा
२८
२७
२६
२५
२४
२३
२२
२१
२०
१९
१८
१७
१६
१५
१४
१३
१२
११
१९२९
१९३०
१९३१
१९३२
१९३३
१९३४
१९३५
१९३६
१९३७

शक्ल नं० ८

मुर्ग़ी और बतख़ के अण्डों की मासिक
क़ीमतों की तफ़सील।
मुर्ग़ी के अण्डों की सालाना औसत क़ीमत फ़ी हज़ार २२॥) रु०
बतख़ के अण्डों की सालाना औसत क़ीमत फ़ी हज़ार १५॥) रु०
माहवार कैफ़ियत
माहवार कैफ़ियत
अप्रैल
जुलाई
अक्टूबर
बतख़ के अण्डे
मुर्ग़ी के अण्डे
१०९
१०८
१०७
१०६
१०५
१०४
१०३
१०२
१०१
१००
९९
९८
९७
९६
९५
९४
९३
९२
९१
९०
८९
८८
जनवरी
अप्रिल
जोलाई
अक्तूबर
दिसम्बर
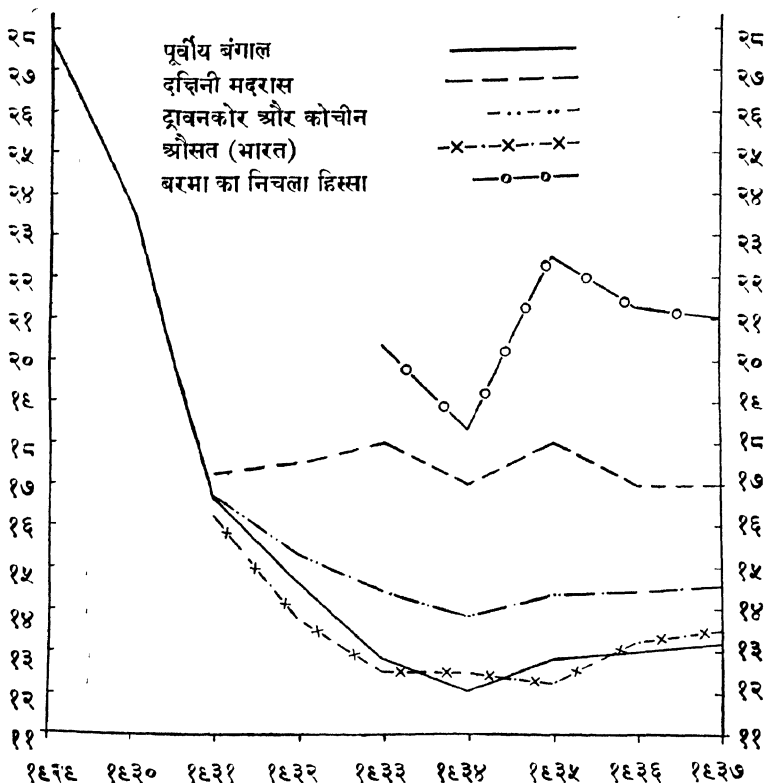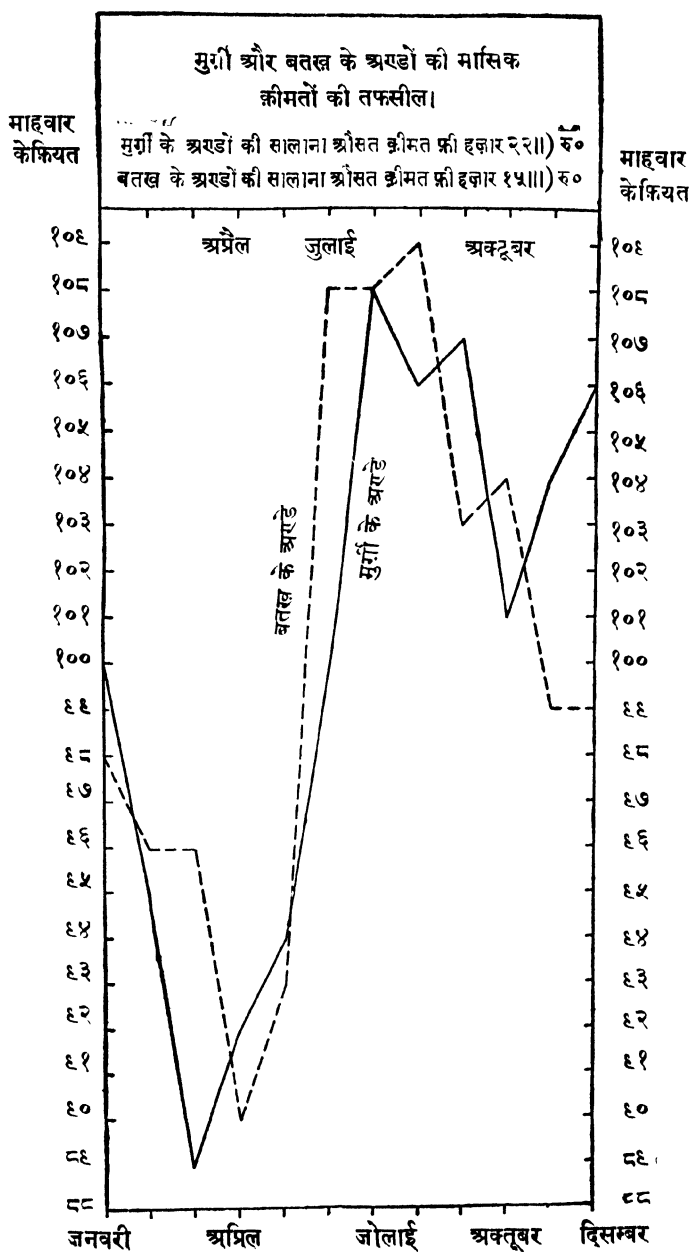
शक्ल नं० ६

गुजरात (बम्बई प्रेसीडेंसी) में अण्डों की कीमतों का सप्ताहिक उतार चढ़ाव
की० फी सौ अण्डे
(पारदी, चिकली और गमदावी एक दूसरे से ५ से ८ मील के फासिले पर हैं)
रवाना करने वाले स्टेशन पर
ज फ म अ म ज ज अ स ओ न द
पारदी
१९२९
चिकली
१९३०
गमदावी
१९३१
गमदावी
१९३२
चिकली
१९३३
गमदावी
१९३४

चौथा अध्याय

अण्डों को बिक्री के लिए तैयार करना

मुर्गियों के दरबे बहुत गन्दे रहते हैं इसलिए बाजार में बिक्री के लिए आए हुए अण्डे आधे से ज्यादा मैले कुचैले होते हैं। बत्तख़ के अण्डे मुर्गी के अण्डों से भी अधिक मैले होते हैं। इस मैल कुचैल से अण्डे की अच्छाई और उसका स्वाद बिगड़ जाता है और अण्डे को धो डालने पर भी यह ख़राबी दूर नहीं होती। मुर्गियाँ पालने वाले या गाँवों के अण्डे इकट्ठे करने वाले छोटे बड़े अण्डे अलग अलग करने के लिए अण्डों को नहीं छाँटते। वे तो बस मुर्गी और बत्तख़ के अण्डों को ही छाँट कर अलग अलग करते हैं और ज़्यादा टूटे हुए, चटख़े हुए, या ख़राब अण्डे निकाल देते हैं। कुछ थोक के व्योपारी भी अण्डों को अलग अलग करके दर्जों में बाँटते हैं और गिनती के कुछ व्यापारी उन पर अपने नाम और पत्ते की मोहरें भी लगाते हैं। मोहर वही व्यापारी लगाते हैं जो ख़राब अण्डे बदलने को तैयार हों। इस प्रकार वह अपना बचाव करते हैं कि किसी और के ख़राब अण्डे उन से न बदलवाए जा सकें। अण्डों को ठीक ढङ्ग से अलग अलग दर्जों में बाँटने और ढङ्ग से पैक करके भेजने और उन्हें रोशनी के सामने रख कर ताज़गी की जाँच करने के पश्चात् ख़राब अण्डे निकाल देने की रीति इस समय गिनती ही के कुछ व्यापारियों के यहाँ है। यह कार्य्य उन एगमार्क ग्रेडिंग एण्ड पैकिङ्ग स्टेशनों पर भी होता है, जो सरकार के क़ानून ऐग्रिकल्चरल प्रोड्यूस ग्रेडिंग एण्ड मार्किङ्ग ऐक्ट सन् १६३७ ई० के मातहत खोले गए हैं।

अण्डे पैक करके भेजने का जो ढङ्ग आजकल चालू है वह तो यही है कि अण्डों को टोकरियों में बन्द करके भेजते हैं। यह टोकरियाँ इतनी मज़बूत नहीं होतीं कि अण्डों का बोझ सम्भाल सकें। इसके अतिरिक्त अण्डों की तहों के बीच में भूसा इत्यादि भी नहीं रखते, जो अण्डों को टकरा कर टूटने से बचाए। इसलिए इन टोकरियों की रक्षा के लिए माल एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने वालों पर ही भरोसा करना पड़ता है। इन निर्बल टोकरियों को उठाया जाता है तो कुछ न कुछ अण्डे अवश्य ही टूटते हैं। उत्तरी भारत में ऐसी टोकरियाँ बहुत अधिक चलती हैं। इनमें दस से लेकर तीस प्रतिशत तक अण्डे टूट जाना साधारण बात है।

दक्षिणी भारत में जिन टोकरियों से यह काम लिया जाता है वे बहुत कुछ सलेम (Salem) नामक स्थान से मँगाई जाती हैं। यह टोकरियाँ अधिक दृढ़ होती हैं और इनके ढकने बाँस के होते हैं। इनमें अण्डे रखते समय तहों

के बीच में भूसा रखते हैं; इसलिए इन टोकरियों में अण्डे बहुत कम टूटते हैं। भारतवर्ष से बर्मा को अण्डे घड़ों और मटकों में भेजे जाते हैं। लकड़ी के बक्सों में अण्डे पैक करने का रिवाज गिनती के कुछ स्थानों पर पाया जाता है।

ढङ्ग की टोकरियाँ और मटके इत्यादि न होने के फलस्वरूप जो टूट फूट होती है उससे प्रति वर्ष लगभग पन्द्रह लाख रुपए की हानि होती है; इसलिए दृढ़ टोकरियाँ व्यवहार में लाने (बक्स हो तो और भी अच्छा है) और पैक करते समय अण्डों की तहों के बीच में भूसा रखने के रिवाज को अधिक फैलाने की अति आवश्यकता है। प्रयोग से यह पता चला है कि अण्डे दृढ़ टोकरियों या बक्सों में रख कर भेजने के फलस्वरूप टूट फूट में जो कमी होगी उससे पाँच प्रतिशत लाभ अधिक हुआ करेगा। यह पीछे बताया ही जा चुका है कि ग्रेड किए हुए अण्डों पर ग्रेड न किए हुए अण्डों के मुक़ाबले में २० प्रतिशत अधिक लाभ होता है। इन दोनों बातों को देखते हुए यह स्पष्ट है कि अण्डों को ग्रेड करने और उन्हें ढङ्ग से पैक करके भेजने के स्टेशन खुलने से मुर्ग़ियाँ पालने वालों को बहुत लाभ होगा।
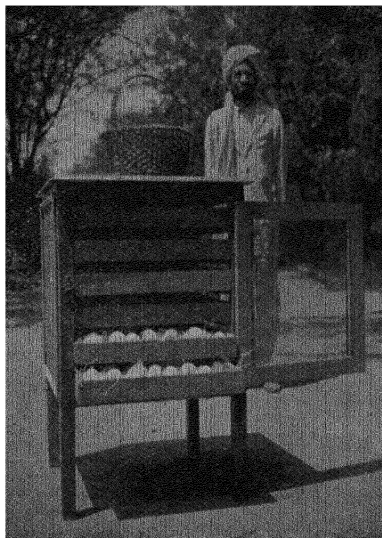
चित्र नं० ७

पौलट्री फ़ारमों पर अण्डे रखने का तरीक़ा।

चित्र नं० ८
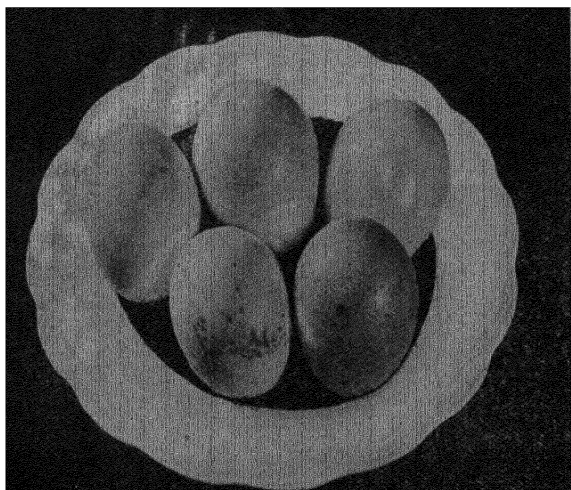
अण्डों पर छालिया और काजू के अर्क़ के धब्बे
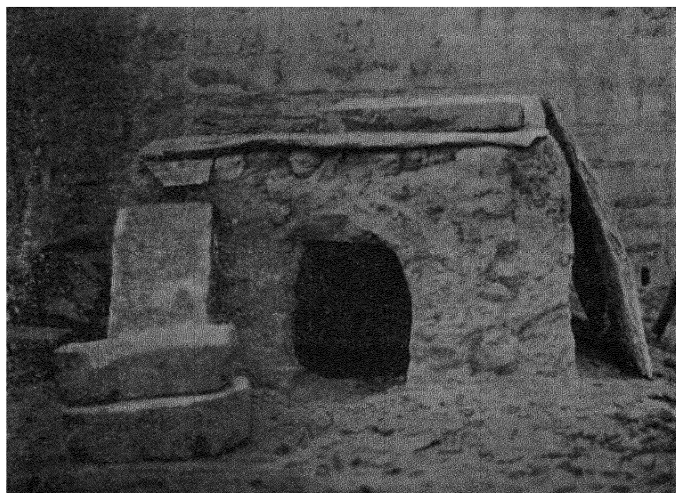
चित्र नं० ६

मट्टी का एक मैला दरबा

चित्र नं० १०

एक दसरी क़िस्म की मर्ग़ियों के दरबे जो कभी कभी गाँव में काम में लाये जाते हैं
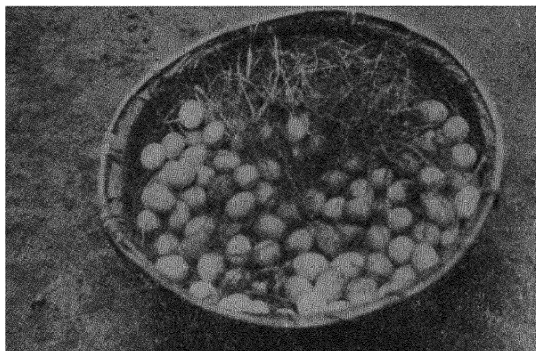
चित्र नं० ११

बतख़ के मैले अण्डों की एक टोकरी

चित्र नं० १२
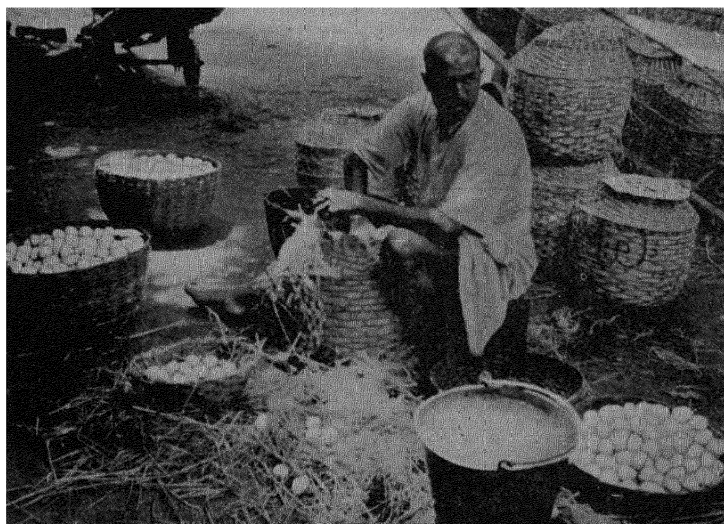
ख़पत के मुक़ामों पर अण्डों को साफ़ और छाँट कर अलग किया जा रहा है
(कपड़ा भिगोने के लिए पानी की बाल्टी रक्खी है)
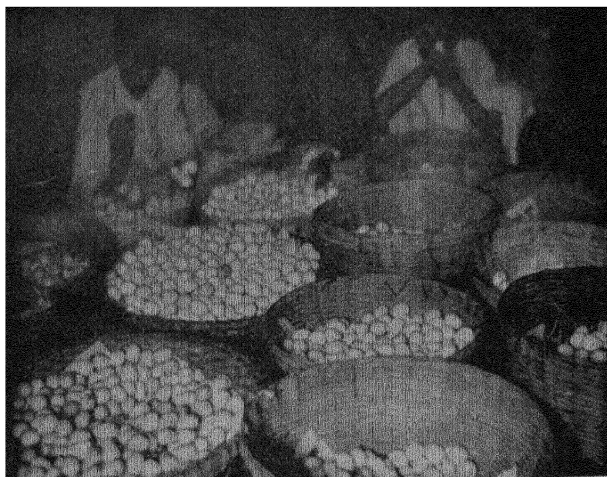
चित्र नं० १३

खुर्दा फ़रोशों का अण्डों को जाँचना और छाँट कर अलग २ करना

चित्र नं० १४
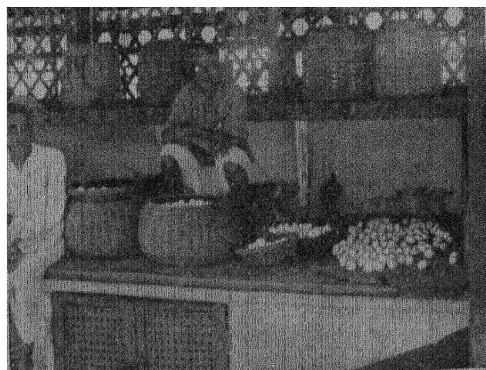
क्राफ़ोर्ड मारकेट (बम्बई) में अण्डों की एक खरीज की दुकान

चौथे अध्याय की व्याख्या

चित्र ७। पोल्टरी फार्मों में अंडे किस तरह रखे जाते हैं ?

जिन पोल्टरी फ़ार्मों का प्रबन्ध अच्छा है उन में अण्डे साफ़ सुथरी और सूखी जगहों पर रखे जाते हैं। अण्डों को लकड़ी की किश्ती में रख कर अलमारी में रखते हैं या अलमारी के तख्तों में अण्डों के घर बनवा कर उन्हें उन छेदों में फँसा कर रखते हैं। इस प्रकार की अलमारियाँ इसी मतलब के लिए विशेष रूप से बनाई जाती हैं।

चित्र ८ ।अण्डे इकट्ठे करते समय मैले क्यों हो जाते हैं ?

गावों में से इकट्ठे किए हुए अण्डे तो पहले से ही मैले होते हैं। कारण यह है कि जिन दरबों में मुर्गियाँ अण्डे देती हैं वे बहुत गन्दे और बेढंगे होते हैं कभी कभी मुर्गियाँ पालने वाले अण्डों को हरी छालियाँ और काजू की टोकरयों में रख देते हैं और अण्डों को टोरियों में इन्हीं वस्तुओं के साथ रख कर बाज़ार ले जाते हैं। कोचीन और ट्रावन्कोर में यह रिवाज बहुत है। हरी छालियाँ और काजू का रस अण्डों पर गिरने से उनके छिलकों पर ज़र्द और हरे रङ्ग के धब्बे पड़ जाते हैं जो धोने पर भी नहीं छूटते। इस प्रकार अण्डे मैले मालूम होने लगते हैं।

चित्र ६ और १०। गाँवों के मुर्गियों के दरबों में क्या क्या खराबियां होती हैं ?

गावों के दरबे मिट्टी के होते हैं। इनमें हवा के लिए भी रास्ता नहीं रखा जाता। इसके अतिरिक्त उन्हें साफ़ सुथरा रखना भी कठिन होता है। इसलिये उनमें जूएं आसानी से पैदा होजाती हैं जो दिखाई नहीं देतीं और मुर्गियों में बीमारियां फैलाती हैं। इन दरबों में बीटें भी इकट्ठी होती रहती हैं। मुर्गियाँ बीटों में अण्डे देती हैं तो वे मैले हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त दरबे इतने छोटे होते हैं कि जितनी मुर्गियां उन में रखी जाती हैं उन सब के लिये उनमें स्थान नहीं होता।

चित्र ११। बाज़ार के अण्डे कितने मैले होते हैं ?

अण्डों के जिन पारसलों का मुआयना किया गया उनमें मुर्गी के अण्डे ४४ प्रतिशत और बत्तख़ के अण्डे ७१ प्रतिशत मैले कुचैले थे। इन पर कीचड़ या बीटें जमी हुई थीं या टूटे हुए अण्डों के छिलके या उनकी ज़र्दी या सफ़ेदी चिपकी हुई थी। बत्तख़ के अंडे और भी ज्यादा मैले थे। बत्तखें तो रहती ही ऐसे स्थानों पर हैं जहाँ कीचड़ और दलदल होती है।

अण्डों को मैल कुचैल से क्यों बचाना चाहिये ?

अण्डे पर जो मिट्टी लग जाती है उससे अण्डे का बाहरी भाग ही नहीं आन्तरिक भाग भी ख़राब होकर अंडे का स्वाद बिगड़ जाता है। यदि अंडा गीला हो तो इस मिट्टी और मैल कुचैल से वह और भी अधिक आसानी से नष्ट हो जाता है; परन्तु मैल कुचैल छुड़ाने के लिये अण्डे को धोना नहीं चाहिये। धुलने के बाद वह अधिक समय तक ताजा नहीं रह सकता। पानी लगने से उस की चमक दमक भी जाती रहती है जो ताज़गी की निशानी है। इसके अतिरिक्त धुलने के बाद अण्डे में अण्डे जैसी बास भी आने लगती है! इसलिये जहाँ तक हो सके अंडे को मैला होने से तो बचाया जाए किन्तु मैल छुड़ाने के लिये पानी से न धोया जाए वरन् एक साफ़ सुथरे कपड़े को पानी में भीगा सा करके उससे मैल कुचैल पोंछ दिया जाए।

चित्र १२ | शहरों में अण्डों के दुकानदारों को अण्डे बेचने से पहिले अण्डों के साथ क्या क्या तरकीबें करनी पड़ती हैं ?

मुर्ग़ियाँ पालने वाले छाँट कर छोटे बड़े अण्डे अलग नहीं करते; न ही वे फटे और टपकते हुए अण्डे निकालते हैं और न अण्डों का मैल कुचैल दूर करते हैं। ये सब काम दुकानदारों को करने पड़ते हैं।

चित्र १३ और १४ | अण्डों के फुटकर बेचने वाले दुकानदारों को क्या करना पड़ता है ?

कभी कभी उन्हें अण्डों को रोशनी के सामने रख कर ताज़गी की जाँच भी करनी पड़ती है और कभी कभी वे छाँट कर छोटे बड़े अंडे अलग भी करते हैं। साइज़ एकसा रखने के लिये वे कभी कभी कई इलाक़ों के अण्डों को एक दूसरे में मिला भी देते हैं।

चित्र १५ से २७ तक | किस किस भाँति की टोकरियों, घड़ों और बक्सों में अण्डे पैक करके एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजे जाते हैं, और उसमें क्या क्या ख़राबियाँ हैं ?

अधिकतर टोकरियों में ही अण्डे पैक करके भेजे जाते हैं, परन्तु ये टोकरियाँ, बाँस, पल्ली, अरहर, झाऊ अथवा शहतूत की होती हैं। इसके अतिरिक्त अण्डों की तहों के बीच में फूस इत्यादि भी नहीं रखते ताकि अण्डे आपस में टकराकर टूट न जाएँ। इसके फलस्वरूप प्रत्येक टोकरी में लगभग एक-तिहाई अण्डे टूट जाते हैं।
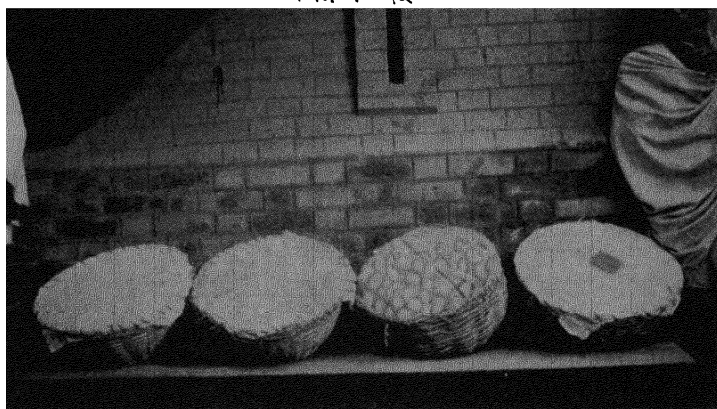
चित्र नं० १५

टोकरियाँ जो उ० प० सीमा प्रान्त में इस्तेमाल की जाती हैं
(टोकरियों को ढकने के लिऐ बारीक और कमज़ोर मलमल इस्तेमाल की जाती है)

चित्र नं० १६
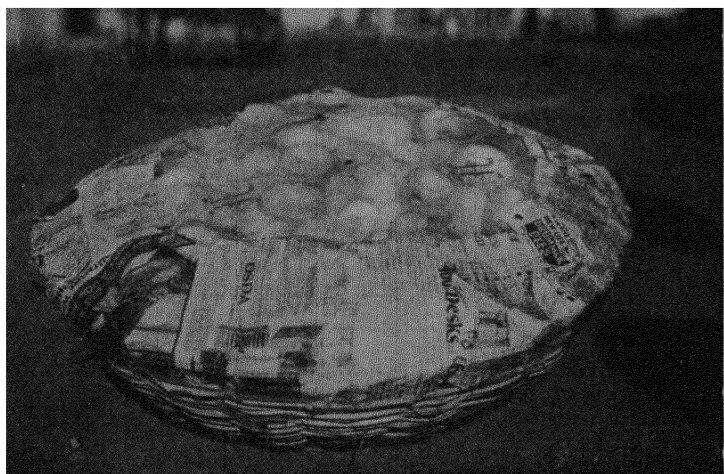
अमरोहा (संयुक्त प्रान्त) से आई हुई एक टोकरी
(चोरी से बचाव के लिऐ काग़ज़ चिपकाया गया है)
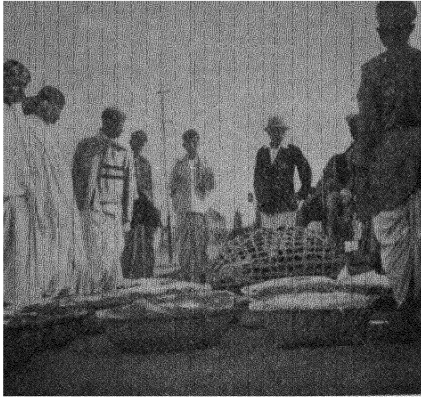
चित्र नं० १७

बंगाल में इस्तेमाल होने वाली टोकरियाँ

चित्र नं० १८
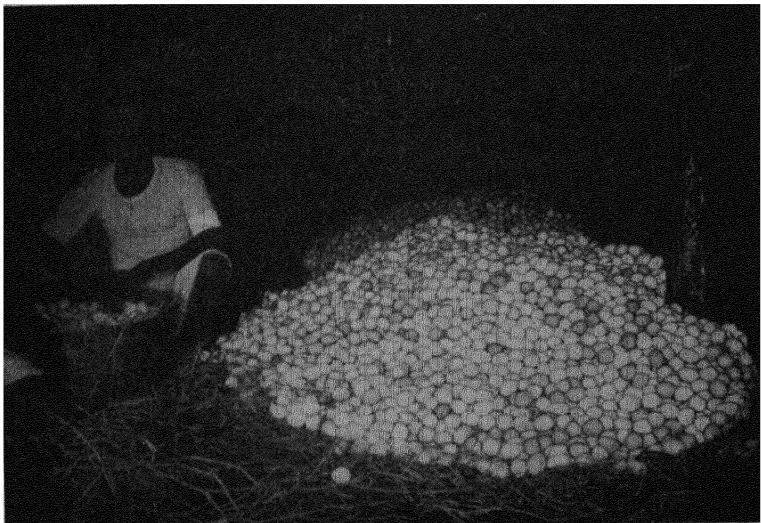
चगांनार (ट्रावनकोर रियासत) में २२,००० अन्डे टोकरियों में बन्द किये जा रहे हैं

चित्र नं० १६

कोटाराकारा (ट्रावनकोर रियासत) में अन्डों की टोकरियां सावधानी से ऊपर नीचे रक्खी जा रही हैं

चित्र नं० २०
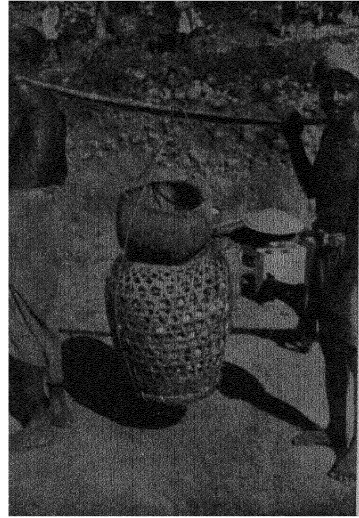
.र में इस्तेमाल की जाने वाली टोकरियां

चित्र नं० २१

आसाम में इस्तेमाल की जाने वाली टोकरियां
(इन्हें पहाड़ों पर ले जाने का तरीका देखिये)

चित्र नं० २२

आसाम में इस्तेमाल की जाने वाली एक और किस्म की टोकरियां

चित्र नं० २३

बरमा में इस्तेमाल किये जाने वाले बक्स

चित्र नं० २४
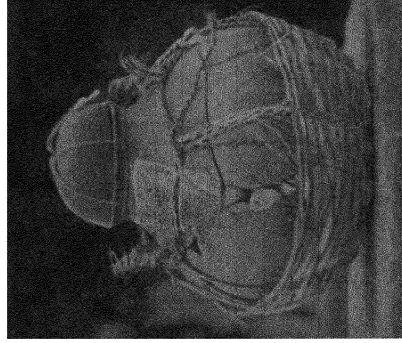
गुजरात (बम्बई प्रेसीडेन्सी) में इस्तेमाल होने वाला एक टूटा हुआ घड़ा

चित्र नं० २५
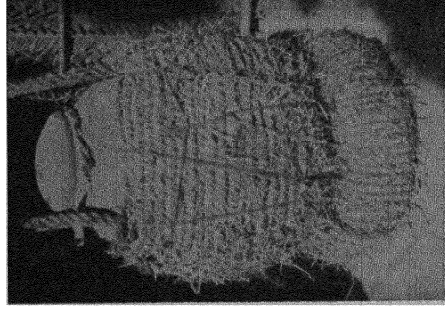
यह मट्टी के मटके जिन में चूने आदि से महफूज़ किये हुये अन्डे बरमा को भेजे जाते हैं

चित्र नं० २६

वह टोकरियां जो कुछ फारमों में काम आती हैं

चित्र नं० २७

वह् बक्स जो कुछ फारमों में काम आते हैं

चित्र नं० २८

अन्डों को बरमा भेजने से पहले उन पर चूना लगाया गया है

चित्र नं० २६

अन्डों के छिलकों पर से चूना छुड़ा लिया गया है
(ऊपर की किश्ती में साफ़ किये हुऐ अन्डे हैं)

चित्र नं० ३०

बहतर किस्म के बक्स

चित्र नं० ३१
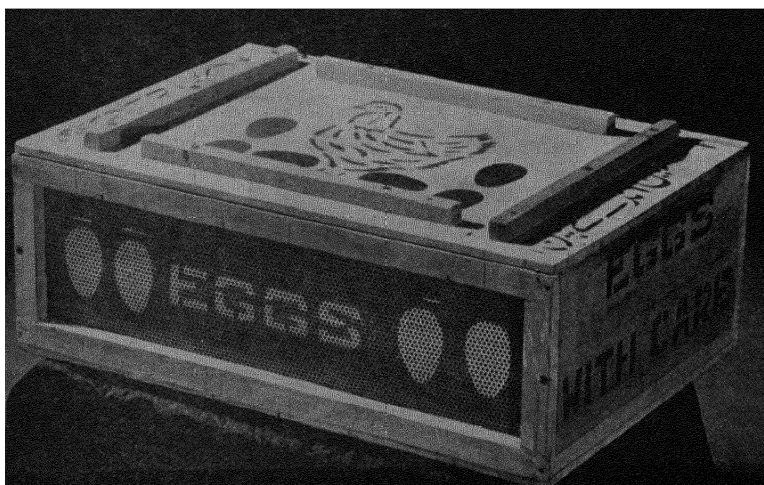
अण्डे मटकों में पैक करके भेजने की रीति सिर्फ़ गुजरात (बम्बई प्रेज़िडेन्सी) में है। बङ्गाल और मद्रास से बर्मा को अण्डे मटकों में चूने में रख कर भेजे जाते हैं। कुछ पोल्टरी फ़ार्मों में इस मतलब के लिए एक टोकरी व्यवहार में लाई जाती है जिसके ऊपर एक दस्ता लगा होता है। फ़ार्मों में अण्डे इस प्रकार से पैक करते हैं कि पहले प्रत्येक अण्डे को पतले काग़ज़ में और फिर बादामी रङ्ग के अथवा समाचार पत्र के काग़ज़ में लपेटते हैं और फिर सब अण्डों को भूसे में रख कर बन्द कर देते हैं। कुछ बड़ी फ़ार्में अण्डे लकड़ी के बक्सों में पैक करती हैं जिनमें गत्ते के ख़ाने होते हैं। प्रत्येक अंडे को अलग अलग प्रत्येक खाने में रखते हैं। फ़ार्म वाले यह बक्स वापिस मँगा लेते हैं। बर्मा में भी अण्डे लकड़ी के बक्सों में पैक किये जाते हैं। ये बक्स भी वापिस मँगा लिये जाते हैं।

चित्र २८ और २९ | **बर्मा को अंडे चूने में पैक करके किस प्रकार भेजे जाते हैं?**

बारह सेर चूने में उसके अनुसार जल डाल कर गाढ़ी लेई सी बना लेते हैं। यह ढाई हज़ार अण्डों को काफ़ी होती है। अण्डों को एक मटके में रख कर ऊपर से यह लेई डाल देते हैं। मटका ४० इञ्च ऊँचा और ३० इञ्च के घेर का होता है। बङ्गाल और मद्रास से बर्मा को अण्डे इसी प्रकार भेजे जाते हैं। जब अण्डे बर्मा पहुँचते हैं तो पहिले छिलकों पर से चूना खुरच कर टाट के टुकड़े से अण्डों को साफ़ कर लिया जाता है। इसके पश्चात् दुकानों पर रखा जाता है।

शकल ३० और ३१ | **बेढंगे मटकों और निर्बल टोकरियों में अण्डे पैक करने से कितनी हानि होती है और इसे किस उपाय से घटाया जा सकता है?**

इससे प्रति वर्ष व्यापार को १५ लाख रुपये की हानि होती है। प्रयोग करने से पता चला है कि यदि अण्डे बक्सों में पैक किये जाया करें तो इस हानि में बहुत कुछ कमी हो जाए।

पांचवां अध्याय

अंडे इकट्ठे करना और उन्हें ग्राहकों तक पहुँचाना

हिन्दुस्तान में लगभग डेढ़ सौ बड़े बड़े स्थान ऐसे हैं कि उन में से प्रतिदिन तीन हज़ार से अधिक अण्डे इकट्ठे किए जाते हैं और कुछ जगहों में से तो प्रतिदिन पचास पचास हज़ार अण्डे एकत्रित करके खपत के स्थानों पर भेजे जाते हैं।

बहुत से अण्डे उन बाज़ारों अथवा पैंठों में ही इकट्ठे होते हैं जो देहातों में प्रत्येक तीसरे चौथे अथवा सातवें आठवें दिन लगती हैं। भारतवर्ष के दक्षिणी और पूर्वी भागों में इन पैंठों का अधिक रिवाज है, किन्तु इस के साथ साथ यह भी मानना पड़ता है कि यदि पैंठों के अतिरिक्त अण्डे इकट्ठे करने का और कोई साधन न होता तो बहुत से अण्डे ग्राहकों तक पहुँचने से पूर्व ही पुराने हो जाया करते। शायद इसी लिये देहातों में आदमी गाँवों गाँवों फिर कर अण्डे इकट्ठे करते हैं और यह ढङ्ग कुछ बुरा भी नहीं है; किन्तु प्रत्येक आदमी एक दिन में पाँच, छः, सात अथवा ज्यादा से ज्यादा आठ गाँवों ही में घूम सकता है और वह भी उस परिस्थिति में जब कि सड़कों की हालत अच्छी हो। इस के अतिरिक्त यह लोग अण्डे इकट्ठे करने का कार्य्य किसी विशेष ढङ्ग या प्रबन्ध से भी नहीं करते। जो मनुष्य अण्डे इकट्ठे करने को निकलता है वह कुछ गाँवों में से एक दिन अण्डे लेता है और कुछ गाँवों में दूसरे या तीसरे दिन जाता है। कहीं कहीं ऐसा भी होता है कि एक गाँव में एक ही दिन में कई कई अण्डे इकट्ठे करने वाले जा पहुँचते हैं और फिर सात सात, आठ आठ दिन तक उन में से एक भी पलट कर उस गाँव में नहीं जाता; इसलिये इस कार्य्य को नियमानुसार और प्रबन्धपूर्वक करने की बड़ी आवश्यकता है। जैसे रियासत बाँसदा में कुल अण्डे इकट्ठे करके बाहर भेजने का अधिकार किसी एक पुरुष या श्रेणी को दे दिया जाता है जो इस बात के लिये उत्तरदायी होती है कि रियासत के सारे इलाके में से नियुक्त मूल्य के अनुसार अण्डे इकट्ठे किये जाएँगे।

ऐसा प्रतीत होता है कि मुर्ग़ियाँ पालने वालों की को-आपरेटिव सोसाइटियाँ अण्डे इकट्ठे करने के कार्य्य को कुछ अच्छी तरह से नहीं चला सकीं। अब से कुछ दिनों पहिले तक इस भाँति की सात सोसाइटियाँ थीं जिन के २२६ मेम्बर थे; किन्तु उन्होंने इतने कम अण्डे इकट्ठे किये कि यदि उनके इकट्ठे किये हुए अण्डों की कुल संख्या को मेम्बरों की कुल संख्या पर फैलाया जाए तो औसतन यह हिसाब फैलता है कि प्रत्येक मेम्बर ने प्रतिदिन २ अण्डे ही सोसाइटी को दिये। इनके मुक़ाबले में सीमा प्रान्त की अण्डे इकट्ठे करने

वाली को-आपरेटिव ऐसोसियेशन ने (जिसमें मुर्गियाँ पालने वाले नहीं बल्कि अण्डे इकट्ठे करने वाले सम्मिलित हैं) अपने जीवन के पहिले ही वर्ष में अच्छा ख़ासा लाभ प्राप्त करके दिखाया और इसी के साथ साथ आस पास के ज़िलों के मुर्गियाँ पालने वालों को अण्डे के दाम भी १५ प्रतिशत अधिक मिलने लगे। यह ऐसोसियेशन सरकार के क़ानून, ऐग्रिकल्चरल प्रोड्यूस, ग्रेडिङ्ग ऐण्ड मार्किङ्ग ऐक्ट सन १९३७ ई० के मातहत बनाई गई है।

गाँवों के अण्डे इकट्ठे करने वाले अण्डों के व्यापार की कुञ्जी हैं, इसलिए इन लोगों को नियमानुसार और प्रबन्धपूर्वक काम करना सिखाया जाए ताकि अण्डे प्रतिदिन इकट्ठे होकर बिक्री के लिए चले जाया करें। इससे व्यापार की उन्नति होगी। कुछ लोगों का यह विचार हो सकता है कि जिन ज़िलों में अण्डे अधिक होते हैं वहाँ अण्डों का बाज़ार प्रतिदिन लगवाने का प्रयत्न क्यों न किया जाए; परन्तु इस समय ऐसा करना ठीक नहीं। प्रतिदिन बाज़ार लगेगा तो मुर्गियाँ पालने वालों को बहुत थोड़े थोड़े से अण्डे बेचने के लिए प्रतिदिन बड़ी बड़ी दूर से इस बाज़ार में आना पड़ेगा; परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि तीसरे चौथे अथवा पाँचवे आठवें दिन की पैठों से ही काम चल जायगा। इनसे भी काम नहीं चलेगा क्योंकि व्यापार की उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि किसी स्थान में प्रतिदिन जितने अण्डे होते हैं, वे सब उसी दिन इकट्ठे करके बिक्री के लिए खपत के स्थानों को भेज दिए जाएँ।

यह बड़े आश्चर्य की बात है कि अण्डों की खपत के स्थानों पर भी थोक बिक्री के बाज़ार नहीं हैं। थोक के दुकानदार रेलवे स्टेशनों के प्लेटफार्मों ही पर पैठ जाते हैं और मुर्गियों और अण्डों की टोकरियाँ जैसी आती हैं वैसे ही मुसाफ़िरों के हाथ बेच डालते हैं। कुछ टोकरियाँ उन होटलों इत्यादि में भी भेज देते हैं जिनमें खपत अच्छी होती है। बची हुई टोकरियाँ अपने घरों को ले जाते हैं और वहाँ फुटकर बेचने वालों को माल भेजने से पहिले भिन्न भिन्न स्थानों के अण्डों को एक दूसरे में मिलाते हैं या छाँट कर छोटे बड़े अण्डे अलग करते हैं या उन्हें रोशनी के सामने रख कर ताज़गी की जाँच करते हैं। ऐसा भी होता है कि फुटकर बेचने वाले दुकानों पर अपना ही नहीं वरन् थोक फ़रोशों ही का माल बेचते हैं। बहुत से थोक बेचने वाले तो अपनी फुटकर की दुकानें भी रखते हैं या वे थोक के साथ साथ फुटकर भी बेचते हैं।

अण्डे बेचने वाले अपने बड़े बड़े ग्राहकों; जैसे अस्पतालों और होटलों इत्यादि से, ठेके भी कर लेते हैं। इन ठेकों में यह शर्त बहुत कम रखी जाती है कि किस भाँति के अण्डे दिये जाएँगे। इसके कारण झगड़े उत्पन्न होते हैं। क्या अच्छा हो यदि ठेके पर अण्डे ख़रीदने वाले ग्रेड किये हुए अण्डे लिया करें।

पब्लिक के रुपये से चलने वाले कार्यालय, जैसे स्कूल, अस्पताल इत्यादि ग्रेड किये हुए अण्डे ख़रीदने लगें तो अण्डों के व्यापार को बहुत लाभ हो।

म्युनिस्पिल कमेटियों को भी अपने बाज़ारों में अण्डों के दुकानदारों को स्थान देना चाहिये। अण्डो की थोक बिक्री के लिये रेलवे स्टेशनों के प्लेटफ़ार्म ठीक नहीं। दकानों या जगहों का प्रबन्ध होना चाहिये। थोक बिक्री का बाज़ार कोल्ड स्टोर से मिला हुआ और रेलवे स्टेशन के पास ही होना चाहिये ताकि माल ले जाने और अण्डों को ठण्डा रखने में आसानी हो। यह बात भी सोचने की है कि अण्डों की बिक्री के लिये ऐसी सुविधाएँ जैसी ब्रिटेन की बड़ी बड़ी रेलवे कम्पनियों ने दे रखी हैं हमारे देश की म्युनिस्पल कमेटियों और रेलवे कम्पनियों दोनों में से किस को देनी चाहिएँ। यदि हर स्थान को थोक बेचने वाले व्यापार की देख भाल और दुकानों से लाभ उठाने के लिए एक एक सभा बना लें तो इससे उन सरकारी अफ़सरों को बहुत मदद मिलेगी जो इस कार्य्य के लिए नियुक्त किए गए हैं।

शक्ल नं० १०

शहरों की मांग को पूरा करने के लिए अन्डे इकट्ठे करने और इन्हें बांटने के आम साधन

कम अहमीयत के साधन - - - -
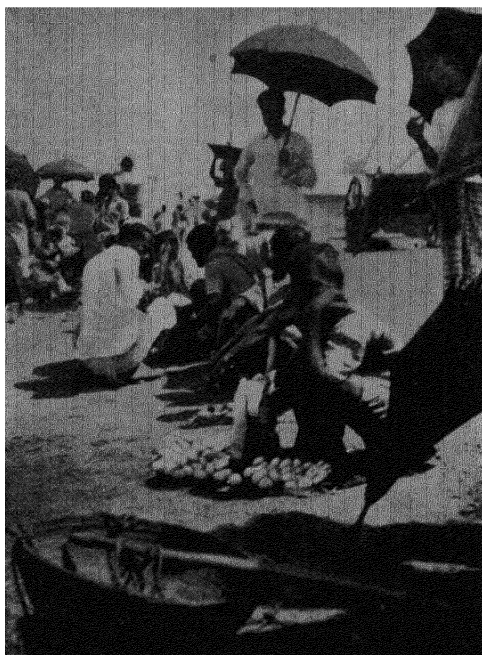
चित्र नं० ३२

सप्ताहिक बाज़ार का एक दृश्य

चित्र नं० ३३
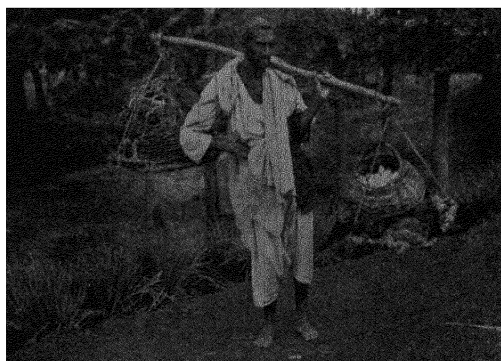
गांव में अन्डे और मुर्ग़ी इकट्ठे करने वाला
(एक टोकरी के नीचे कुछ मुर्ग़ियां भी हैं)

पांचवें अध्याय की व्याख्या

शक्ल १० और चित्र ३१ / **कौन कौन लोग अण्डे इकट्ठे करके ग्राहकों तक पहुँचाते हैं ?**

गाँवों के अण्डे इकट्ठे करने वाले तथा गाँवों के अण्डे बेचने वाले उन बाज़ारों या पैंठों में से अण्डे इकट्ठे करते हैं जो हमारे देश में प्रति तीसरे चौथे या सातवें आठवें दिन हज़ारों की संख्या में लगती हैं। मुर्गियाँ पालने वालों की कुछ को-आपरेटिव सोसाइटियाँ भी अण्डे इकट्ठे करती हैं, किन्तु उन से कुछ ज़्यादा अण्डे इकट्ठे नहीं होते। कुछ लोग मुर्गियाँ पालने वालों से अण्डे और मुर्गियाँ लेकर ग्राहकों के हाथ बेचते हैं। रहा अण्डे बेचने का व्यापार, वह सिर्फ़ थोक बेचने वाले ही करते हैं। थोक बेचने वाले फुटकर भी बेच सकते हैं। सिर्फ़ फुटकर बेचने वाले दुकानदार बहुत कम हैं।

चित्र ३३ / **गाँवों के अण्डे इकट्ठे करने वाले किस ढँग से अण्डे इकट्ठे करते हैं ? इसमें क्या क्या खराबियाँ हैं ?**

गाँवों में मर्द ही अण्डे इकट्ठे करते हैं किन्तु कुछ प्रान्तों में यह कार्य औरतें भी करती हैं। आरम्भ में इन स्त्री-पुरुषों ही के यत्न से अण्डे अधिक संख्या में इकट्ठे होते हैं। ये बहुत से ग्रामों में घूम कर प्रत्येक घर से थोड़े थोड़े अण्डे इकट्ठे करते हैं। इनमें दो भाँति के पुरुष होते हैं। एक वे जो किसी व्यापारी के आधीन नहीं होते, स्वयं गाँवों के चक्कर लगाते हैं, अपने व्यापार को अपने ही पैसे से चलाते हैं और अपने इकट्ठे किये अण्डे किसी एक ही दुकानदार से बिकवाते हैं। दूसरे वे जो किसी व्यापारी के लिये मज़दूरी या कमीशन पर काम करते हैं और सिर्फ़ उसी के लिये अण्डे इकट्ठे करते फिरते हैं। इस भाँति के अण्डे इकट्ठे करने वाले गिनती ही के कुछ इलाक़ों में पाए जाते हैं। उन्हें १०० अण्डों पर ४ आने अथवा ५ आने अथवा ६ आने कमीशन मिल जाता है और ७ रुपये से लेकर १० रुपये तक मासिक मज़दूरी भी मिलती है। किन्तु मासिक मज़दूरी पर रखते समय दुकानदार अण्डे इकट्ठे करने वाले से यह तय कर लेता है कि प्रतिदिन इतने अण्डे इकट्ठे हो जाया करेंगे। इस ढँग में सब से बड़ी ख़राबी यह है कि कुछ इलाक़ों में एक गाँव में एक ही दिन कई कई मनुष्य अण्डे इकट्ठे करने जा पहुँचते हैं। अधिकतर ऐसा भी होता है कि अण्डे इकट्ठे करने वाले लगातार या नियमानुसार गाँवों में नहीं पहुँचते। इस लिये कोई ऐसी श्रेणी बननी चाहिये जो नियमानुसार तथा प्रबन्धपूर्वक काम करे और प्रतिदिन ताजे अण्डे इकट्ठे करके बिक्री के लिये भिजवाए। सीमाप्रान्त की

को-आपरेटिव एसोसियेशन ने जो काम करके दिखाया है उससे तो यही पाया जाता है कि इस मतलब के लिये उसी जैसी एसोसियेशन ठीक रहेगी।

अण्डे इकट्ठे करने के उस ढँग का भी वर्णन कर देना चाहिये जो रियासत बाँसदा में बरता जाता है। इस रियासत में सारे इलाक़े में से अण्डे इकट्ठे करके भेजने का अधिकार प्रति वर्ष नीलाम कर दिया जाता है। जिसके नाम बोली छूटती है उसे एक लाइसेन्स दे दिया जाता है। जिस भाव मुर्ग़ियाँ पालने वालों से अण्डे ख़रीदे जाने चाहिये वह भी नियुक्त कर दिया जाता है। लाइसेन्सदार को इसी भाव से रियासत के सारे इलाक़े में से अण्डे इकट्ठे करने पड़ते हैं।

छठा अध्याय

अण्डे एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजना

अण्डे देहात से पास के नगरों को तो भेजे ही जाते हैं, परन्तु इस यात्रा के अतिरिक्त उन्हें कुछ लम्बी लम्बी यात्रायें भी करनी पड़ती हैं, जैसे सीमा प्रान्त और पंजाब से सिन्ध, संयुक्त-प्रान्त और बम्बई को, और कोचीन, ट्रावनकोर तथा मद्रास के कुछ भागों से उत्तर की ओर हैदराबाद दक्खिन तथा बम्बई को। बङ्गाल से अण्डे बर्मा को जाते हैं और जो बच रहते हैं वे संयुक्त प्रान्त, देहली और बम्बई भेज दिये जाते हैं।

साधारणतया पास के स्थानों को मोटरों, साइकिलों, तथा घोड़ा गाड़ियों ही से अण्डे भेजे जाते हैं। बङ्गाल, ट्रावनकोर और बर्मा में पास के स्थानों को नावों द्वारा माल भेजते हैं। जिन स्थानों पर नावों से अंडे भेजने पर अधिक खर्च नहीं आता और माल भेजने की शीघ्रता भी नहीं होती, वहाँ दूर के स्थानों पर भी रेल द्वारा अण्डे न भेज कर नावों से ही अण्डे भेजते हैं। विशेषकर जब अण्डे चूने में रख कर के भेजे जाते हैं तो रेल द्वारा नहीं वरन् नावों से ही भेजते हैं।

परन्तु साधारणतया यही रिवाज़ है कि दूर के स्थानों को अण्डे रेल द्वारा (पैसेन्जर, ऐक्सप्रेस अथवा मेल ट्रेन से) ही भेजते हैं। अण्डे मालगाड़ी से कम ही भेजे जाते हैं। कारण यह कि मालगाड़ी की रफ्तार बहुत सुस्त होती है। औसतन अंडे ४०५ मील की यात्रा १५ या १६ घण्टे में समाप्त करते हैं और ख़र्च ६ पाई प्रति दर्जन बैठता है जो फुटकर दामों का ८ प्रतिशत और मुर्गियाँ पालने वालों को मिलने वाले दामों का १५, १६ या १७ प्रतिशत होता है। परन्तु जो अण्डे एक ही प्रान्त में एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजे जाते हैं उनकी यात्रा इतनी लम्बी नहीं होती और व्यय भी कम होता है।

अण्डे एक जगह से दूसरी जगह भेजते समय जितनी टूट फूट होती है उसमें व्यापार को प्रति बर्ष लगभग १५ लाख रुपये की हानि होती है। इसका बड़ा कारण यह है कि अण्डे पैक करने के ढंग में बहुत सी ख़राबियाँ हैं। अण्डों के बहुत से पारसलों की जाँच करने से यह पता चला कि १६ प्रतिशत पारसल खपत के स्थानों तक पहुंचते समय तक टूट फूट कर टपकने लगते हैं। यह नहीं समझना चाहिये कि अण्डे दूर भेजने में टूट फूट अधिक और निकटवर्ती स्थानों को भेजने में टूट फूट थोड़ी होती है। प्रश्न पास और दूर का नहीं वरन पैकिंग का है। वह जितना निर्बल होगा टूट फूट उतनी ही अधिक होगी। इसके अतिरिक्त कुछ अण्डे पारसल में से चोरी भी हो जाते हैं क्योंकि पारसल की

टोकरी इतनी निर्बल होती है कि उसे तोड़ कर अण्डे निकाल लेना कुछ भी कठिन नहीं होता।

अण्डों के किराये में कमी करने की कोई आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। जिन जिन इलाकों में अण्डे अधिक होते हैं उनके बड़े बड़े स्थानों से खपत के इलाक़ों के बड़े-बड़े स्थानों तक के किराये में कुछ सुविधाएँ दे दी गई हैं ताकि पैदावार के इलाक़ों के लोगों का उत्साह बढ़े और वे अपना माल दूर दूर भेजें। कदाचित खपत के इलाक़ों के छोटे छोटे स्थानों को माल भेजने में और बन्दरगाहों को अण्डे रवाना करने में भी इन सुविधाओं द्वारा लाभ उठाया जा सकता है

बिक्री के समय तीस प्रतिशत अण्डे ताजे नहीं होते। अतः यह पकाने के अण्डों के भाव से ही बेचे जा सकते हैं। १० या १२ प्रतिशत अण्डे सर्वथा ख़राब होते हैं। यह भी सस्ते ही बेचने पड़ते हैं। इससे प्रतिवर्ष व्यापार को २५ लाख रुपये की हानि होती है। रेल के डिब्बों में हवा या ठण्डक पहुंचाने के प्रबन्ध में भी कुछ सुधार होना चाहिये। गर्मियों में अण्डे अधिक ख़राब हो जाते हैं इसलिये ऐक्सप्रेस ट्रेनों के माल के डिब्बों में रेलवे वालों को छोटे-छोटे खाने बनवाने चाहिये जिन्हें बर्फ से ठंडा रखा जा सके। रेलवे वालों को यह भी चाहिये कि व्यापार से सम्बन्ध रखने वाले मनुष्यों का ध्यान इनसे लाभ उठाने की ओर आकर्षित करें

टोकरियों, मटकों और पैकिङ्ग की खराबियाँ दूर करने की बड़ी आवश्यकता है। सम्भव है कि ऐसा करते समय खाली टोकरियाँ और बक्स वापिस मंगाने की शर्तों में परिवर्तन करना पड़े। अभी तक रेलवे वालों ने अण्डे इकट्ठे करने और खपत के स्थानों तक पहुँचाने के लिये कोई उपाय नहीं निकाला है। इससे यह प्रश्न और भी अधिक शोचनीय हो जाता है। सुधार के उपाय सोचे जाएँगे तो साथ ही इस बात को भी ध्यान में रखना पड़ेगा कि खपत के स्थानों के रेलवे स्टेशनों के प्लैटफार्म ही अण्डों की बिक्री के लिये थोक बाज़ार का काम देते हैं। यदि रेलवे कम्पनियाँ ऐसे स्टेशनों पर 'कोल्ड स्टोरेज' (अण्डे बर्फ में रखने) का प्रबन्ध नहीं कर सकतीं तो फिर उन्हें रेल के किराए ही में अण्डे पास के किसी 'कोल्ड स्टोर' तक पहुँचाने चाहिये।

नक़शा नं॰ ३.

हिन्दुस्तान का चित्र जिस से पता लगता है
कि अण्डे कहाँ से कहाँ भेजे जाते हैं

तशरीह -
जहाजों के इस्तेमाल
के लिये अण्डे

पेशावर
मुरी
श्रीनगर
कोयटा
लाहौर
जालंधर
शिमला
गजरौला
देहली
कराची
हैदराबाद
झांसी
इलाहाबाद
धुलियान
गंगा
हबीगंज
सिराजगंज
लकसम
पोरबंदर
बिलीमोरा
महू
जबलपुर
टाटानगर
हावड़ा
कलकत्ता
चटगांव
माडले
कम्पटी
अक्याब
बम्बई
गुलबर्गा
हैदराबाद
सगौना
काकीनाडा
रंगून
क्याक
बंगलौर
मद्रास
मैसूर
आरला
कुलम
कोटायम
तूती
कोरन
लंका
कोलम्बो
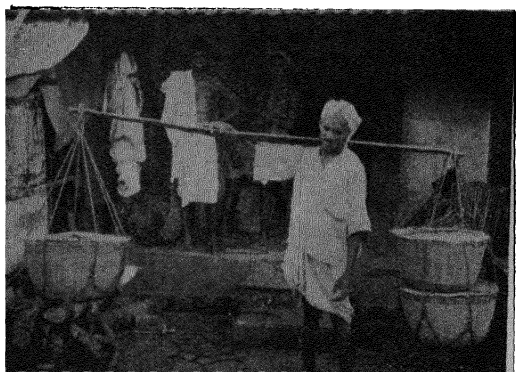
चित्र नं० ३४–बंहगी वाला अन्डे रेलवे स्टेशन को ले जा रहा है
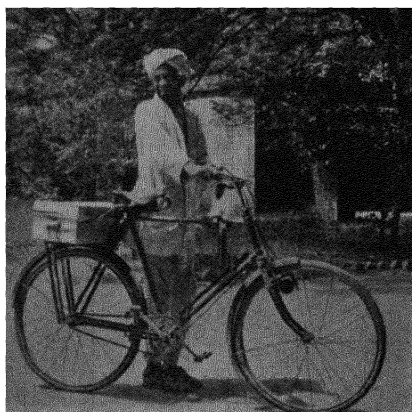
चित्र नं० ३५–अन्डों को एक खुर्दा फरोश साईकल पर ले जा रहा है
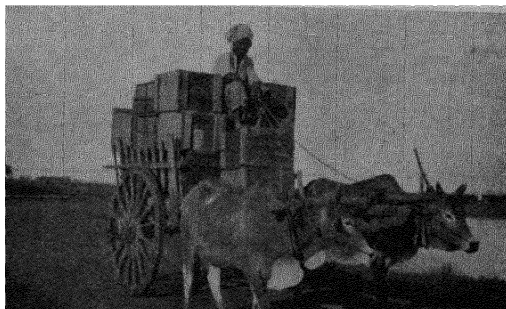
चित्र नं० ३६–बैलगाड़ी के ज़रिये अन्डे एक जगह से दूसरी जगह ले जाये जा रहे हैं

छटे अध्याय की व्याख्या

नक़्शा ३ | प्रतिवर्ष कितने अंडे पैदावार के स्थानों से खपत के स्थानों को भेजे जाते हैं और वे किस ओर से किस ओर को जाते हैं ?

प्रतिवर्ष लगभग ६३२ लाख अंडे रेल द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजे जाते हैं। अण्डे बाहर भेजने के मामले में बङ्गाल सब से बढ़ा हुआ है। ट्रावनकोर कोचीन और मद्रास से भी अंडे बड़ी बड़ी संख्याओं में दूसरे स्थानों को जाते हैं। बाहर से अंडे मँगाने के मामले में बर्मा सब से आगे है, किन्तु यदि सिर्फ़ हिन्दुस्तान को लिया जाए तो मद्रास और बम्बई प्रेज़िडेन्सी सब से अधिक अंडे मँगाने वाले इलाक़े हैं।

अंडे रेल से भेजने पर कितना किराया लगता है ?

नीचे के नक़शे में यह दिखाया गया है कि कितने अंडों पर कितनी दूर के लिए कितना किराया लगता है। (रेलवे वाले मन के हिसाब से किराया लेते हैं)

फ़ासला	किराया १०० अण्डों पर			किराया १ दर्जन अण्डों पर		
	रु०	आ०	पा०	रु०	आ०	पा०
२५ मील तक	०	०	४½	०	०	½
५० मील से अधिक किन्तु ७५ मील से कम	०	१	१½	०	०	१½
१०० ,, ,, ,, ,, १२५ ,, ,, ,,	०	१	१०½	०	०	२¾
२२५ ,, ,, ,, ,, २५० ,, ,, ,,	०	२	१०½	०	०	४
४७५ ,, ,, ,, ,, ५०० ,, ,, ,,	०	४	१०½	०	०	७
६७५ ,, ,, ,, ,, १००० ,, ,, ,,	०	८	७½	०	१	½
१२२५ ,, ,, ,, ,, १२५० ,, ,, ,,	०	१०	६	०	१	३
१४५० ,, ,, ,, ,, १५०० ,, ,, ,,	०	१२	०	०	१	५

चित्र ३४ से ३८ तक | अंडों को किन किन तरीक़ों से एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजते हैं ?

अण्डे टोकरियों में मनुष्यों के सिरों पर या बहङ्गियों या ठेलों में रख कर भेजे जाते हैं और बाईसिकलों, लारियों, ताँगों, नावों और जहाजों से भी भेजे जाते हैं।

अंडे एक जगह से दूसरी जगह भेजते समय कितनी टूट फूट होती है ?

रेल से भेजे हुए २६ पारसलों का मुआयना करने पर १६.३ प्रतिशत अण्डे टूटे हुए पाए गए। इन में से ११ प्रतिशत चटखे हुए थे और ५.३ अधिक टूटे हुए थे। अन्य साधनों से (आदमियों के सिरों पर रख कर, बाईसिकलों, ताङ्गों, लारियों, और नावों द्वारा) भेजे हुए अण्डों के पारसलों में से ५.७ प्रतिशत टूटे हुए पाए गए। इनमें से ४.२ प्रतिशत चटखे हुए थे और १.५ प्रतिशत इतने अधिक टूट चुके थे कि टपक रहे थे।

चित्र ३६ | **पारसलों में से अंडों की चोरी को कैसे रोका जा सकता है ?**

पारसलों में से अण्डे इस लिए चोरी होते हैं कि वे निर्बल टोकरियों में बन्द करके भेजे जाते हैं। बक्सों में बन्द करके भेजे जाया करें तो इस प्रकार की चोरियाँ न हों।

———

चित्र नं० ३७
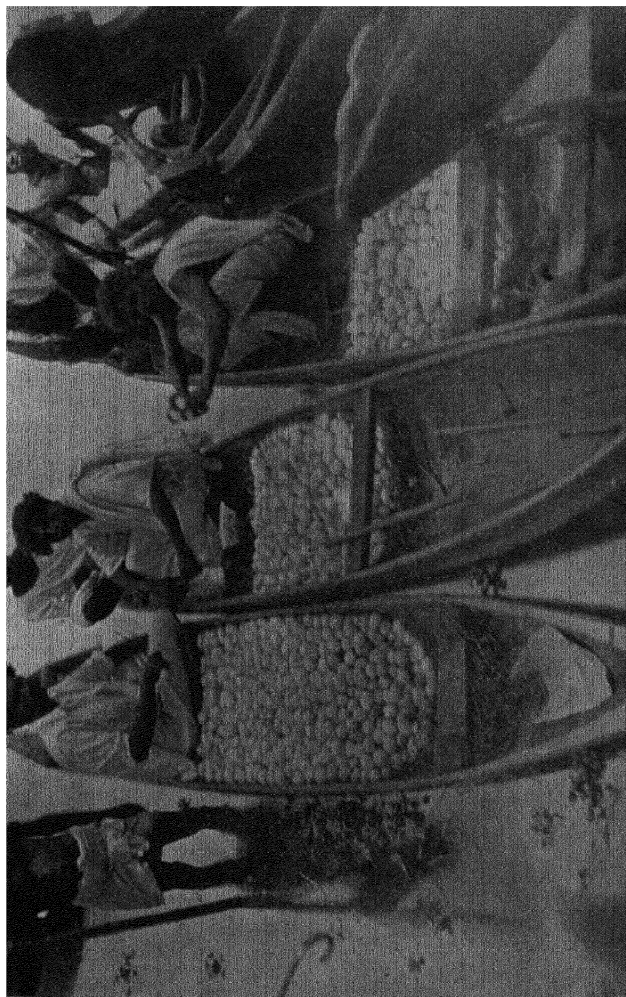
रियासत ट्रावनकोर में खुले हुए अण्डे किशतियों से इकट्ठे किये जाते हैं और एक जगह से दूसरी जगह भेजे जाते हैं

चित्र नं० ३८

अण्डे और मुर्गियां आदि लारियों से एक जगह से दूसरी जगह ले जाये जा रहे हैं

चित्र नं० ३६

रास्ते में टोकरियाँ काट कर कुछ अण्डे निकाल लिऐ गये हैं

सातवां अध्याय

अंडों को ग्रेड करना

बड़े अण्डे छोटे अण्डों से अधिक दामों में बिकने चाहिये। किन्तु सिर्फ बड़ा होने से अण्डों के दाम नहीं बढ़ते। दाम तो अण्डे की शकल सूरत और ताज़गी को देख कर लगाये जाते हैं। जाँच करने वाले यह देखते हैं कि छिलका साफ़ सुथरा है या नहीं और अण्डा देखने में दूसरे अण्डों जैसा प्रतीत होता है या नहीं। अण्डे की ताज़गी की जाँच उसे तेज़ रोशनी के सामने रख कर देखने से ही हो सकती है। अच्छे और ताज़ा अण्डे में ख़ून के धब्बे या जाली नहीं होती। ज़र्दी अण्डे के बीचों बीच निर्मल और धुँधला सा घेरा बनाती हुई दिखाई देती है और अपने स्थान पर स्थिर रहती है। अण्डे के चौड़े सिरे पर हवा के लिए जगह होती है। जैसे जैसे अण्डा पुराना होता जाता है यह जगह फैल कर बड़ी होती जाती है। अतः ताज़ा अण्डों में यह जगह छोटी होनी चाहिये।

थोक बाज़ार के बहुत से अण्डों का मुआयना करने से मालूम हुआ है कि इनमें से प्रायः दो तिहाई अण्डे तो ताज़ा कहे जा सकते हैं शेष ३० प्रतिशत अण्डे 'पकाने' के योग्य होते हैं और ५ या ६ प्रतिशत सर्वथा ख़राब निकलते हैं। गर्मियों में आधे से अधिक अण्डे ख़राब निकलते हैं।

खोज करने पर यह देखा गया है कि वैसे तो छोटे बड़े सब अण्डे एक ही भाव बेचे जाते हैं परन्तु कुछ बड़े बड़े शहरों में थोक के व्यापारी कभी कभी छाँट कर छोटे बड़े अण्डे अलग अलग भी कर लेते हैं और बड़े अण्डों को छोटे अण्डों से अधिक दामों में बेचते हैं। बम्बई के थोक वालों का यह दस्तूर है कि वे ताज़गी के अनुसार अण्डों को तीन भागों में बाँटते हैं—(१) ताज़े (२) जालीदार और (३) नर्म या गन्दे अण्डे।

इसीलिए हिन्दुस्तान के मुर्ग़ी और बत्तख़ के अंडों के लिए एग्माके दर्जों (ग्रेड्ज़) की निशानियाँ नियुक्त की गईं और अच्छे बुरे अण्डों का अन्तर बताया गया और यह प्रबन्ध किया गया कि जो नियम बनाए जाँए उन का पालन करते हुए प्रयोग द्वारा देखने के लिए अण्डों को ग्रेड किया जाए और उन पर ग्रेड की मोहरें लगाई जाँए।

जो प्रयोग इस समय तक हुए हैं उन से मालूम होता है कि बेचने से पहले अण्डों को ग्रेड कर लेने से खपत के स्थानों पर ८ प्रतिशत से भी अधिक लाभ होता है। अण्डे ग्रेड करने से जो लाभ होता है वह अण्डे बेचने वालों ही को

नहीं वरन् मुर्गियाँ पालने वालों को भी मिलता है। पैदावार के स्थानों पर प्रयोग करने से प्रतीत हुआ है कि यदि अण्डों को खपत के स्थानों को रवाना करने से पूर्व ग्रेड कर लिया जाए और ढंग से पैक करके भेजा जाए तो मुर्गियाँ पालने वालों को १५ से २० प्रतिशत तक अधिक लाभ हो सकता है। इसका कारण यह है कि रेल द्वारा भेजने में जिन अण्डों के खराब होने का भय होता है वे पैदावार के स्थानों पर ताज़ा अण्डों के भाव बिक सकते हैं। इसी प्रकार टूटे हुए और कुछ २ खराब अण्डे भी पैदावार के स्थान पर अच्छे दामों में बेचे जासकते हैं। यदि इन अण्डों को दूर के इलाक़ों को भेजा जायगा तो वहाँ पहुंचते समय तक यह इतने अधिक खराब हो जाएँगे कि बिक ही न सकेंगे। इसके अतिरिक्त ऐसे अण्डों को पैदावार के स्थानों पर रोक लेने से रेल के किराये में भी बचत होती है। इन सब बातों से यह साबित हुआ है कि अण्डों को पैदावार के स्थानों पर ग्रेड करने से लाभ होता है।

परन्तु अण्डों को किसी ढंग से ग्रेड करने के लिए यह आवश्यकता है कि ऐसे दर्जे बनाए जाँए जो कि सब स्थानों पर एक से हों और जिन्हें सभी स्थानों पर माना जाता हो। यदि ऐसा न होगा तो ग्राहकों और दुकानदारों दोनों को परेशानी उठानी पड़ेगी और दामों का मुक़ाबला भी न हो सकेगा। दर्जों के आपस में गड़बड़ हो जाने से अण्डे बेचने वाले एक दूसरे को हानि पहुंचाने के लिए जोड़ तोड़ भी करने लगते हैं और ग्राहकों को माल भी अच्छा नहीं मिलता। ए ग्रेड के अण्डे प्रत्येक स्थान पर एक ही नाम से पहिचाने जाने चाहिए। इसी प्रकार बी और सी ग्रेड के अण्डों को भी अलग पहिचान होनी चाहिए जो सब को मालूम हो और जिसे सब बरतें। इसी कारण सरकार ने अपने कानून ऐग्रिकलचरल प्रोड्यूस ग्रेडिंग एण्ड मार्किंग ऐक्ट सन् १६३७ से नियम बना कर एग्मार्क के अण्डों के ग्रेडों के नाम स्पेशल ग्रेड, ए ग्रेड, बी ग्रेड, और सी ग्रेड नियुक्त किए। इस समय तो अण्डों को ग्रेड करना या न करना प्रत्येक मनुष्य की इच्छा पर निर्भर है। किन्तु आशा की जाती है कि शीघ्र ही अण्डों के ग्राहक और दुकानदार अण्डों को ग्रेड करने के ढंग को देशभर में फैला देंगे।
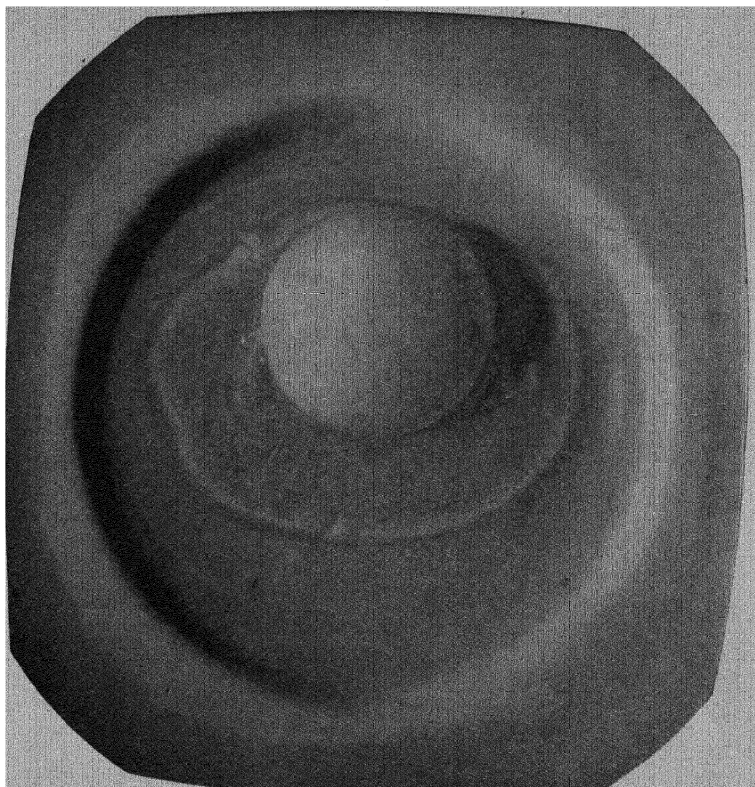
चित्र नं० ४०

ऐगमार्क के अण्डों की भीतरी हालत

चित्र नं० ४१
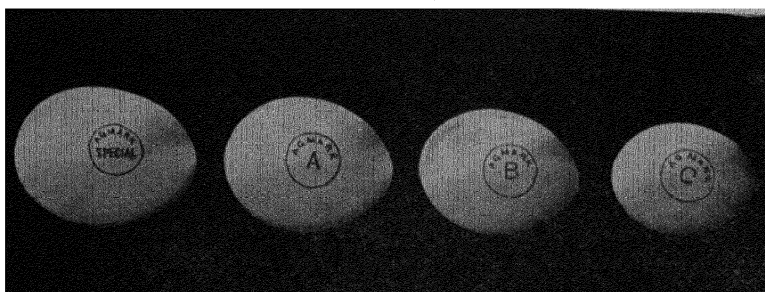
ऐगमार्क के अण्डों के चारों दर्जों की बाहरी हालत
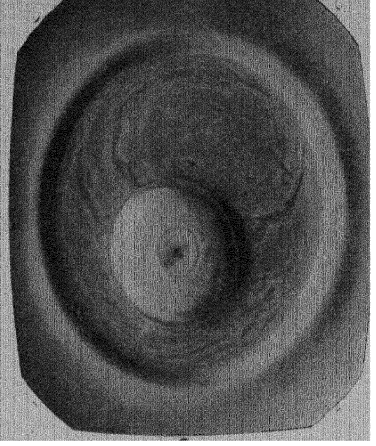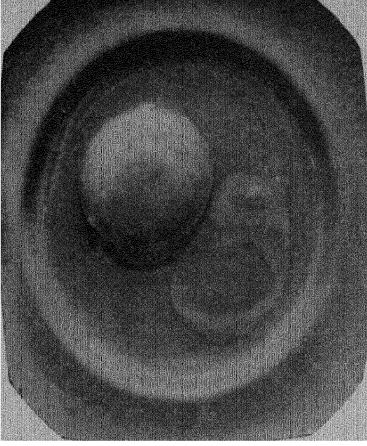
चित्र नं० ४२

(१) ताजा अण्डा (बम्बई)

चित्र नं० ४३

(२) जालीदार अण्डा (बम्बई)

चित्र नं० ४४
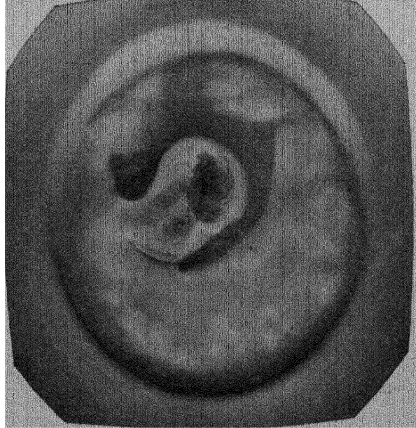
(३) नर्म या ख़राब अन्डा (बम्बई)

सातवें अध्याय की व्याख्या

चित्र ४० | 'एग्मार्क' के अण्डों की ताज़गी की क्या २ निशानियां हैं?

उन नियमों के मातहत जिन्हें अंग्रेज़ी भाषा में ऐग्रिकलचरल प्रोड्यूस (ग्रेडिंग एण्ड मार्किङ्ग) (ऐग) रूल्ज़ सन् १९३७ कहते हैं यह बात अनिवार्य है कि एक अंडे पर एग्मार्क की मोहर लगाने से पहिले कुछ बातें देखी जाँए। प्रत्येक अंडे को तेज़ रोशनी के सामने घुमा फिरा कर देखते हुए यह निश्चय किया जाता है कि इसमें निम्न लिखित गुण पाए जाते हैं या नहीं।

> "अण्डा बिलकुल ताज़ा हो उसे किसी उपाय से खराब होने से बचा कर न रखा गया हो। उसका छिलका स्वच्छ और दृढ़ हो और देखने में भी अण्डा प्राकृतिक प्रतीत होता हो। अण्डे के अन्तरिक भाग में भी कोई दोष न हो। ज़र्दी अण्डे के मध्य में होनी चाहिए और निर्मल और धुन्धलासा घेरा बनाती हुई दिखाई देनी चाहिए। किन्तु वह घेरा शेष अण्डे से पृथक न दिखाई दे। जर्दी हिल जुल तो सके किन्तु चलती हुई प्रतीत न हो। सफ़ेदी निर्मल हो और वायु का स्थान एक इंच के $\frac{3}{8}$ भाग से अधिक गहरा न हो।

ऐसा अण्डा बर्तन में तोड़ा जाए तो ज़र्दी एक स्थान पर खड़ी रहती है और सफ़ेदी इधर उधर फैलती नहीं। यदि ज़र्दी फैल जाए और सफ़ेदी जल के समान हो या वह भी फैलने लगे तो इसका अर्थ यह है कि अण्डा बहुत ताज़ा नहीं है।

चित्र ४१ | एग्मार्क के ग्रेड किये हुए अण्डों पर एग्मार्क की मोहर किस तरह लगाई जाती है?

उन नियमों में जिनका ऊपर वर्णन हुआ है यह बताया गया है कि "प्रत्येक अंडे पर एग्मार्क की मोहर अंडे के छिलके पर न मिटने वाली स्याही से बीचों बीच कम से कम आधे इंच के घेर में लगाई जाए और इसका निशान इतना साफ होना चाहिए कि अच्छी तरह पढ़ा जा सके।" मोहर ऐसे लगाई जाती है कि अंडों को एक लकड़ी की किश्ती में फैला देते हैं जिसमें नर्म कपड़ा बिछा होता है और उन पर धीरे से रबड़ की मोहर से मोहर लगा देते हैं। यह मोहरें दफ्तर ऐग्रिकलचरल मार्केटिंग ऐडवाइज़र, गवर्नमेंट आफ़ इण्डिया से सिर्फ़ उन लोगों को मिलती हैं जिन्हें सरकार की ओर से इसका अधिकार होता है।

चित्र ४२, ४३ और ४४ | **बम्बई शहर के व्यापारी अण्डों को कौन २ से दर्जे में बांटते हैं ?**

बम्बई शहर के व्यापारियों का अण्डे छाँटने का अपना अलग ढंग है। किन्तु वे अण्डों के छिलकों पर किसी तरह की मोहर नहीं लगाते जिससे दर्जों की पहचान हो। वे लोग अण्डों को तीन श्रेणियों में बाँटते हैं (१) ताज़ा अण्डे। (२) जालीदार अण्डे तथा (३) नर्म या गन्दे अण्डे।

(१) ताज़ा अण्डे हाज़री पर खाने और पकाने के मतलब के समझे जाते हैं। जाड़ों में लगभग ५० प्रतिशत अण्डे ताज़े ही समझे जाते हैं। (२) जालीदार अण्ड़ों में ज़र्दी पर रक्त की जाली या माँस की फुटकी होती है ये घटिया होटलों और केक बिस्कुट वालों की दुकानों पर खपते हैं। यदि रक्त की जाली छोटी (मूँग की दाल के दाने के बराबर) हो तो अण्डे ताज़े समझे जाते हैं और यदि जाली या फुटकी मटर के दाने से बड़ी हों तो अण्डे गंदे समझे जाते हैं। (३) नर्म या गंदे अण्डों में सफ़ेदी या ज़र्दी सड़ चुकी होती है और बिगड़कर पानी बन चुकी होती है या ज़र्दी में कालिख दिखाई देती है या इसमें कोई और दोष होता है।

चित्र ४५ से ५४ तक | **एग्मार्क के अंडों को किस तरह ग्रेड किया जाता है ?**

एग्मार्क के अण्डे इस तरह ग्रेड किये जाते हैं कि पहले चटखे या टूटे हुए अंडे छांट कर अलग कर लिए जाते हैं और बाकी अंडों को अण्डे साफ़ करने वाली मशीनों से या हाथों से गीले कपड़े से साफ़ किया जाता है। इसके बाद प्रत्येक अण्डे को तेज़ रोशनी के सामने रख कर उसकी ताज़गी की जांच की जाती है। इसके पश्चात् हाथों से या मशीनों से वज़न के अनुसार अण्डे अलग अलग किए जाते हैं। एक घंटे में २००० से ३००० तक अण्डे छाँट कर अलग अलग करने वाली मशीन ४०० से १००० रुपये तक की आती है। यह एक दिन में १०००० तक अण्डे छांट कर अलग अलग कर सकती है। एक दिन में ३००० अण्डे छांटने वाली मशीन २० रुपये से भी कम की आती है। अण्डों को छांट लेने के बाद एक लकड़ी की किश्ती में फैला देते हैं जिसमें नर्म कपड़ा बिछा होता है। इसके पश्चात् उन पर रबड़ की मोहर से ग्रेड की मोहर लगा देते हैं। अब अण्डों को साफ़ बक्सों में पैक किया जाता है और उन पर शीसे की मोहर से एग्मार्क की ग्रेड के लेबिल लगा दिए जाते हैं। प्रत्येक ग्रेड का अलग रंग का लेबिल होता है। यह लेबिल दफ्तर ऐग्रिकलचरल मार्केटिंग ऐडवाइज़र गवर्नमेण्ट आफ़ इण्डिया से सिर्फ़ उन लोगों को मिलते हैं जिन्हें अण्डे ग्रेड करने का अधिकार होता है।

चित्र नं० ४५
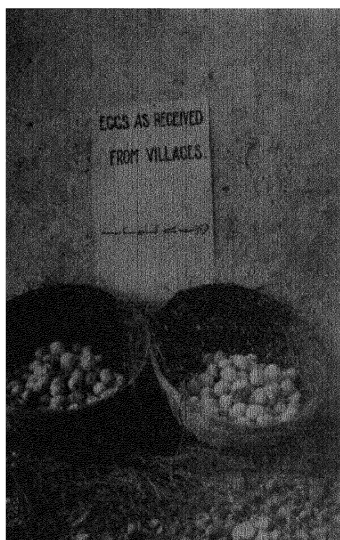
चित्र नं० ४६
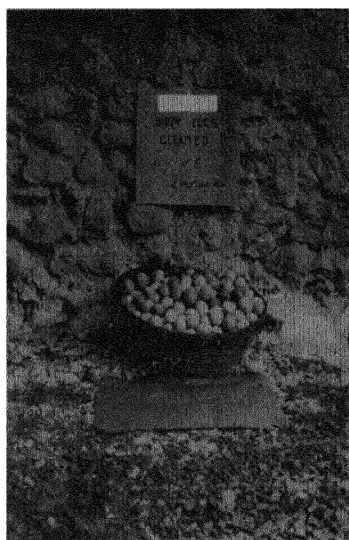
पहली सीढ़ीः—बाईं ओर के चित्र में : गांव से आये हुए मैले, खराब और टूटे हुए अन्डे दिखाये गये हैं

दांई ओर के चित्र में:—इन ही अन्डों को साफ कर लेने के बाद

चित्र नं० ४७
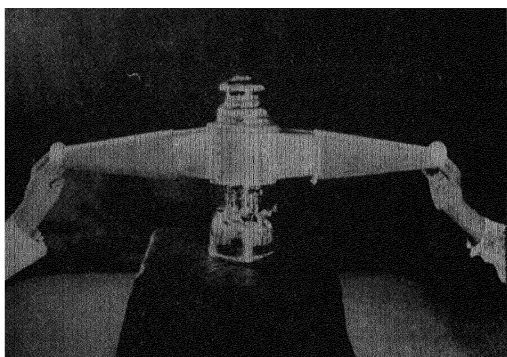
दूसरी सीढ़ी:—सफ़ाई के बाद अन्डों को रोशनी के सामने रख कर देखा जाता है

चित्र नं० ४८

तीसरी सीढ़ी:—रोशनी के सामने देखने के बाद अण्डों को दर्जों में बांटा जा रहा है

चित्र नं० ४६

चौथी सीढ़ी:—इसके बाद इन पर ऐगमार्क की मोहर लगाई जा रही है। (बाईं ओर छांटने की मशीन देखिये

चित्र नं० ५०

पांचवी सीढ़ी:—मोहर लगाने के बाद अण्डों को दर्जों के अनुसार बंद किया जा रहा है
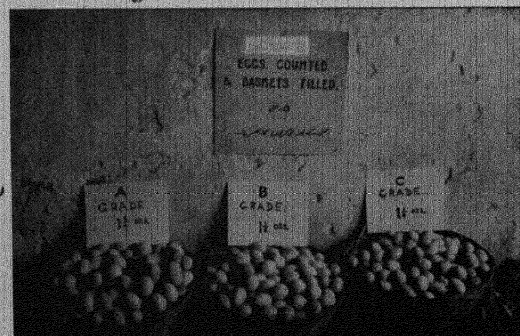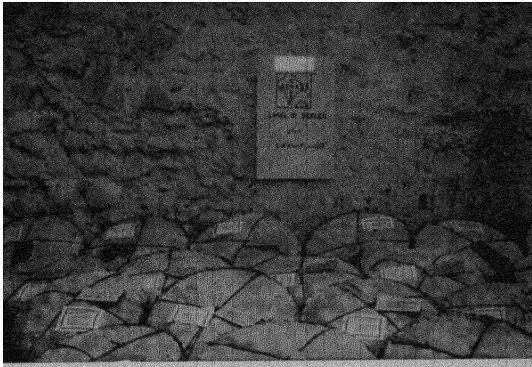
चित्र नं० ५१

छटी सीढ़ीः—अण्डों को टोकरियों में बन्द करने के बाद टोकरियों पर ऐगमार्क के लेबल लगा दिये जाते हैं

चित्र नं० ५२

Serial No.

EGGS-TESTED AND GRADED-EGGS
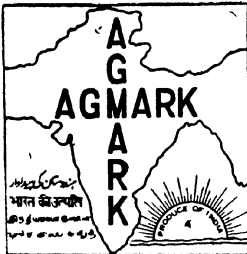
Grade____________________

Number of eggs ____________________

Nett weight____________________

Name of
packing station

Date of Despatch

This label is the property of the Agricultural Marketing Adviser to the Government of India.

टोकरियों के लिए ऐगमार्क का लेबल
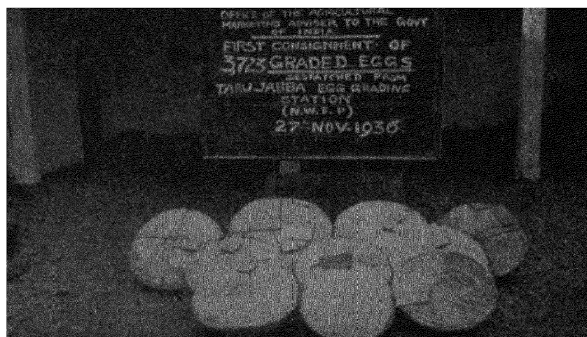
चित्र नं० ५३

सीमा प्रान्त से आने वाले ऐगमार्क अन्डों का पहला पारसल

चित्र नं० ५४
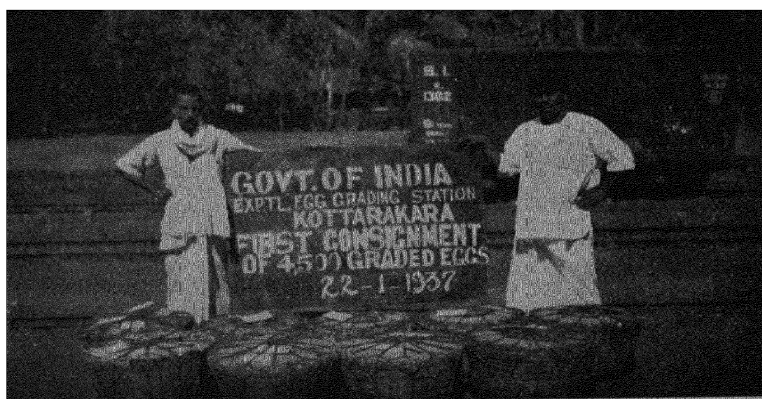
रियासत ट्रावनकोर से ऐगमार्क के अन्डों का पहला पारसल

आठवां अध्याय

अंडे स्टोर में रखना और उन्हें खराब होने से बचाना

अण्डे साधारण गर्मी में ही अधिक समय तक ताज़ा नहीं रह सकते तो भला इस बला की गर्मी में जो गर्मी के मौसम में हिन्दुस्तान में पड़ती है, किस तरह अच्छी दशा में रह सकते हैं। इन्हें ताज़ा रखने के लिए ऐसे स्थानों पर रखना चाहिए जहां ३५° से ४५° फैरनहाइट तक की सर्दी और नमी हो।

जिन देशों में अण्डों का व्यापार बड़े भारी व्यापारिक ढंग से होता है वहां यह साधारण रिवाज़ है कि अण्डों को अधिक समय तक कोल्ड स्टोर में रखा रहने दिया जाता है जैसे अमेरिका में बिक्री के अण्डों का छटा भाग बसन्त ऋतु में (जब अण्डे अधिक संख्या में मिल सकते हैं) कोल्ड स्टोर में रख दिया जाता है और इसके पश्चात् वे अण्डे पाँच सात महीने पीछे बेचे जाते हैं।

हिन्दुस्तान में यह रिवाज़ नहीं है यद्यपि खपत के बड़े २ स्थानों पर, जहां कोल्ड स्टोर हैं अण्डों की कुछ टोकरियाँ कुछ दिनों के लिए कोल्ड स्टोर में रख दी जाती हैं जैसे बम्बई में लगभग ५० हज़ार अण्डे इस तरह कोल्ड स्टोर में रखे जाते हैं और अप्रैल के महीने में साढ़े तीन हज़ार टोकरियाँ कोल्ड स्टोर में रखी जाती हैं। गर्मियों के मौसम में अण्डों की सारी सप्लाई का लगभग एक तिहाई या आधे से कुछ कम भाग प्रति दिन कुछ समय के लिए कोल्ड स्टोर में रख दिया जाता है।

परन्तु कोल्ड स्टोर में टोकरियाँ ऊपर तले नहीं रखी जातीं। इससे बहुत सी जगह जिसमें और टोकरियाँ रखी जा सकती हैं व्यर्थ घिर जाती है। इसलिए बक्सों में अण्डे पैक करने के रिवाज़ को और भी अधिकता से फैलाना चाहिये

मुर्ग़ियाँ पालने वाले अण्डों को कुछ समय तक ठण्डा रखने के लिए बहुत से निजी ढँग भी बर्तते हैं जैसे कुछ लोग अण्डों को ताज़ा पत्तों या भीगी हुई रेती या धानों के छिलकों में पैक करके किसी अन्धेरी कोठरी या कमरे में रख देते हैं। किन्तु इस विषय में अधिक जानकारी नहीं है कि अण्डों को ठण्डा रखने के ये ढंग लाभदायक भी हैं या नहीं। फिर भी इतनी बात तो समझी ही जा सकती है कि पत्तों और धानों के छिलकों से (विशेष कर उस समय जब वे गीले हों) अण्डों में दुर्गन्ध उत्पन्न हो सकती है और कभी २ उनसे अण्डों के छिलकों पर धब्बे भी पड़ जाते हैं। भाव के मौसमी उतार चढ़ाव को देखने और उसका स्टोरेज़ के ख़र्च से मुक़ाबला करने से यह पता चला है कि इस समय स्टोरेज़ (अण्डे बर्फ़ में रखने) का ख़र्च अधिक तो प्रतीत होता है किन्तु

गर्मियों के महीनों मार्च, अप्रैल और सर्दियों में अगस्त से ऊपर के महीनों के बीच में जितने दाम बढ़ते हैं उनमें से स्टोरेज़ का ख़र्च निकालने के बाद भी कुछ बच ही रहता है। इसलिए भारतवर्ष में अण्डों को अधिक दिनों तक स्टोर में रखने के रिवाज़ को फैलाया जा सकता है। अण्डों का व्यापार करने वालों ही को नहीं वरन् कोल्ड स्टोरेज़ की कम्पनियों को भी इस ओर ध्यान देना चाहिए।

जो अण्डे बर्मा भेजे जाते हैं उन्हें चूने में या मिट्टी मिले हुए नमक में मटकों में पैक किया जाता है (चित्र २५)। दवाइयों से अण्डों को खराब होने से बचाने का रिवाज़ हिन्दुस्तान में बहुत कम है और प्रयोग से यह पता चला है कि इनका कोई फल भी नहीं। यह बात ग़ौर करने के क़ाबिल है कि अण्डों को उबाल कर कहां तक बचाया जा सकता है विशेष कर इसलिए कि हिन्दुस्तानी घरों में उबाल लेने के बाद ही अण्डों को दूसरी चीज़ों के साथ मिलाकर पकाया जाता है। इसके अतिरिक्त रेलवे स्टेशनों पर फेरी लगाकर अण्डे बेचने वाले भी काफ़ी संख्या में उबले हुए अण्डे बेच लेते हैं। इससे यह परिणाम निकलता है कि अण्डों को ख़राब होने से बचाने के इस ढंग को भी आज़मा कर देखना चाहिए कि यह व्यापार के लिए कैसा है।

नवां अध्याय

को-आपरेटिव सोसाइटियों की सहायता से अंडों का व्यापार

भारतवर्ष में एक लाख से अधिक को-आपरेटिव सोसाइटियाँ हैं, किन्तु इन में से सिर्फ़ ७ सोसाइटियाँ अण्डों के व्यापार से सम्बन्ध रखती हैं। ये सातों मुर्ग़ियाँ पालने वालों की सोसाइटियाँ हैं और बम्बई प्रेज़िडेन्सी में बेलगाम और एलोर में, रियासत कोचीन में नराक्कल में, रियासत ट्रावन्कोर में मारतण्डम में और संयुक्त प्रान्त में एटा और अमरोहा में हैं। सन् १६३५-३६ ई० में सिर्फ़ यही सोसाइटियाँ कार्य्य करती थीं। इनके २४७ मेम्बर थे और इनके पास वसूल की हुई और व्यापार में लगाई हुई सम्पत्ति ढ़ाई हज़ार रुपये से कुछ अधिक थी अर्थात् प्रत्येक मेम्बर के सिर्फ़ दस रुपये जमा थे।

ये सब सोसाइटियाँ औसतन २७ दर्जन से कुछ कम अण्डे प्रतिदिन इकट्ठे करती थीं। मारतण्डम की सोसाइटी ने जो सब से बड़ी है एक वर्ष में ३६० रुपये का लाभ प्राप्त करके दिखाया। शेष घाटे में थीं यद्यपि उन्हें को-आपरेटिव डिपार्टमेंण्टो और दूसरे साधनों से लगभग ७०० रुपये मिल चुके थे। इनकी इस दशा का मुक़ाबला उस को-आपरेटिव एसोसियेशन से करना चाहिये जो सीमा प्रान्त में सरकारी कानून, ऐग्रिकलचरल प्रोड्यूस (ग्रेडिङ्ग एण्ड मार्किङ्ग) ऐक्ट सन् १६३७ ई० के मातहत अण्डों को प्रयोग के लिये ग्रेड करने के कारण बनाई गई थी।

यह एसोसियेशन, आरम्भ में पेशावर के पास के एक स्थान पब्बी के आसपास के तेरह या चौदह गांवों के अण्डे इकट्ठे करने वालों ने इस मतलब के लिये बनाई थी कि वे सब मिलकर अण्डों को ग्रेड करने की मशीन और अन्य सामानों को बरत सकें जो मार्केटिंग एडवाइज़र साहिब कुछ दिनों के लिये उन लोगों को बरतने के लिये देने को तैयार थे। नियमों को व्यवहार में लाकर दिखाने के लिये इन लोगों को एक ग्रेडर (अण्डों को ग्रेड करने का काम जानने वाला) और एक कैंडलर (अण्डों को रोशनी के सामने रख कर ताज़गी की जाँच करने वाला) भी दे दिये गए। सोसाइटी वालों ने पहले पब्बी में और इसके बाद पेशावर में अण्डों को ग्रेड करने का कार्य्य इन दोनों पुरुषों की सहायता से चालू किया। कुछ मेम्बर अण्डे धोने और पैक करने लगे। कुछ दफ़्तर में लिखत पढ़त का काम करने लगे और कुछ गाँवों में फिर कर अण्डे इकट्ठे करते फिरे। एक वर्ष में ही इन्होंने प्रान्त के दूसरे स्थानों जैसे मर्दान और हवेलियान में भी अपनी शाख़ाएँ खोल दीं। इनका काम यह था कि अण्डे इकट्ठे करके स्टेशनों को भेजें ताकि वहाँ वे ग्रेड किये जाएँ। इस एसोसियेशन ने

व्यापार में ढाई हज़ार रुपया लगाया था। ३१ जुलाई सन् १९३७ तक, जब कोआपरेटिव डिपार्टमेण्ट ने एसोसियेशन से हिसाब दिखाने को कहा, एसोसियेशन ने ४००० रुपये का लाभ दिखाया। प्रत्येक मेम्बर को उसके परिश्रम के लिये जो मासिक वेतन दिया गया इसके अतिरिक्त है। इसके पश्चात् एसोसियेशन ने ८६० रुपये की ग्रेडिङ्ग मशीन भी ख़रीद ली और इस काम के लिये अपने यहाँ आदमी भी रख लिये और इसके बाद से यह स्टेशन एक व्यापारिक कम्पनी की तरह चालू है। इसने एक साल में लगभग ३० लाख अण्डे इकट्ठे करके प्रान्त के अन्दर ही क्लबों, होटलों और फुटकर बेचने वालों इत्यादि के हाथ बेचे। किन्तु अण्डे अधिक संख्या में लाहौर, देहली, कराँची और बम्बई भेजे गए। इस एसोसियेशन ने खपत के बड़े-बड़े स्थानों के ग्राहकों से मेल जोल बढ़ाने और बिक्री की शर्तें तय करने के लिये अपने खर्च पर अपने सेक्रेटरी और एक मेम्बर को दौरे पर भेजा। ये लोग उन सब स्थानों पर गये जहाँ अण्डों की खपत होती है। इसके अतिरिक्त एसोसियेशन ने किराया कम कराने के लिये रेलवे कम्पनियों से भी बातचीत की और उन्हें अधिक अण्डे भेजे जाने की गारण्टी देकर किराये में कमी कराई।

ऐसोसियेशन के इस परिश्रम का परिणाम यह निकला कि गाँव की मुर्ग़ियाँ पालने वालों को पिछले दामों से १५ प्रतिशत दाम अधिक मिलने लगे अर्थात् पिछले वर्ष के मुक़ाबले में उन्हें १०० अण्डों पर ४ आने लाभ अधिक होने लगा। दूसरी ओर, एसोसियेशन ने अण्डों को ग्रेड करके बेचने से ग्रेड न किये हुए अण्डों के मुक़ाबले में अपने अण्डे खपत के स्थानों पर २० प्रतिशत अधिक दामों में बेचे।

यह दिखाने के लिये कि ग्रेड किये हुए अण्डों पर अधिक लाभ होता है, भिन्न भिन्न बाज़ारों में ग्रेड किये हुए और ग्रेड न किये हुए अण्डे समान मात्रा में भेजना ज़रूरी था। अण्डों के व्यापारियों ने यही तरीक़ा बरतना आरम्भ कर दिया है और अब वे ग्रेड किये हुए अण्डों के साथ थोड़े ग्रेड न किए हुए अण्डे भी भेजते हैं।

दिसम्बर सन् १९३५ के अन्तिम सप्ताह में इस एसोशियेशन को लाहौर में एक टोकरी पर निम्न लिखित दाम मिले :—

	रु०	आ०	पा०
एग्मार्क ए० ग्रेड	१३	०	०
एग्मार्क बी० ग्रेड	१२	८	०
एग्मार्क सी० ग्रेड	१२	०	०
ग्रेड न किए हुए अण्डे	१२	०	०

भारतवर्ष के अधिकतर भागों में धूप या छाया में तापमान १०३° से १०५° फै० तक होता है। इसलिए अण्डे शीघ्रता पूर्वक इकट्ठे करके खपत के स्थानों को रवाना कर दिए जाने चाहिए। यह स्पष्ट है कि पैदावार के इलाक़ों की पेठों में लाए जाते समय भी बहुत से अण्डे ख़राब हो जाते हैं। इसलिए अण्डों के व्यापार की उन्नति के लिए सब से पहला काम यही किया जाना चाहिए कि पैदावार के इलाक़ों में अधिक शीघ्रता से अण्डे इकट्ठे हो जाया करें। गाँवों के अण्डे इकट्ठे करने वाले इस व्यापार की कुँजी हैं। उन्हें सीमा प्रान्त की को-आपरेटिव एसोसियेशन के समान प्रबन्ध पूर्वक और नियमानुसार काम करने की आदत डालनी चाहिए।

इस प्रयोग से यह स्पष्ट हो जाता है कि गाँवों के अण्डे इकट्ठे करने वालों या बेचने वालों की को-आपरेटिव सोसाइटियाँ बनाई जांए तो उनको लाभ होगा और आगे चलकर इसके लिए और भी अधिक गुँजाइश निकलेगी क्योंकि इस समय लगभग डेढ़ सौ स्थान ऐसे हैं जहां से ३००० अण्डे प्रतिदिन इकट्ठे होते हैं और कुछ स्थानों से तो ५०००० अण्डे प्रतिदिन इकट्ठे होते हैं। को-आपरेटिव डिपार्टमेण्टों को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

दसवां अध्याय

अंडे में से बच्चे निकलवाने के कारखाने और बच्चे निकलवाने के अंडो का व्यापार

बच्चे निकलवाने के अण्डों का व्यापार कुछ बड़ा नहीं है। फार्मों वाले या वे लोग ही ऐसे अण्डे बेचते हैं जो विलायती मुर्गियाँ पालते हैं। अन्दाज़ा यह है कि ऐसे लगभग ३००० अण्डे प्रतिवर्ष बिकते हैं। यह बिक्री नवम्बर से मार्च तक होती है जो बच्चे निकलवाने की ऋतु है।

इस समय भारतवर्ष में मुर्गी या बत्तख़ के एक दिन के चूज़ों का व्यापार बिलकुल नहीं होता। इनक्यूबेटरों (बच्चे निकलवाने की मशीनों) से अप्राकृतिक सेक पहुँचा कर थोड़े से अण्डों में से बच्चे निकलवाए जाते हैं। अलबत्ता बर्मा में चीनियों ने बच्चे निकलवाने के बहुत से कारख़ाने बना रखे हैं जहाँ प्रतिवर्ष लगभग २५ लाख बत्तख़ के अण्डों से १६ या १७ लाख बत्तख़ के चूज़े निकलवाए जाते हैं। ये बत्तख़े पालने वालों को भेजे जाते हैं या २० से ४५ रुपये हज़ार तक के भाव के हिसाब से गाँव के मुर्गियाँ पालने वालों के हाथ बेच दिए जाते हैं।

चीनियों के चावल के गर्म छिलकों में अण्डे रखकर बच्चे निकलवाने के तरीक़े के सम्बन्ध में अधिक जानकारी की आवश्यकता इसलिए है कि इस तरीक़े को बंगाल और कोचीन, ट्रावन्कोर के इलाक़ों में बरतना आरम्भ किया जाए या नहीं। ऐसे कारखाने खोलने से ही अण्डों की पैदावार को थोड़े समय में शीघ्रता से बढ़ाया जा सकता है।

चित्र नं० ५५

बरमा के एक मकान के बाहर का रुख जिसके अन्दर बच्चे निकलवाने की जगह है। बाईं ओर खाली टोकरियाँ रक्खी हैं जिनमें बतख के एक रोज़ के बच्चे बन्द करके भेजे जाते हैं

चित्र नं० ५६

बच्चे निकलवाने की जगह का अन्दर का रुख़। तसवीर में बैज़वी शकल के बर्तन देखे जा सकते हैं

चित्र नं० ५७

बच्चे निकलवाने के तीसरे सप्ताह में अन्डों की गर्मी मालूम की जा रही है

दसवें अध्याय की व्याख्या

चित्र ५५, ५६ और ५७ | बर्मा में अंडों से बच्चे निकलवाने के कारखानों में क्या सामान बरता जाता है और बच्चे किसतरह निकलवाए जाते हैं ?

बांस की चटाई को मोड़कर उसका गोल सिलण्डर बना लेते हैं जो दोनों तरफ़ से खुला रखा जाता है। इन सिलंडरों को लकड़ी के किसी बड़े बक्स में रखकर उनके चारों तरफ चावल के छिलके भर देते हैं। बड़ी २ किश्तियों की भी आवश्यकता होती है। जब अण्डों में से बच्चे निकलते हैं तो वे इन्हीं किश्तियों में रखे जाते हैं। प्रति पांचवें दिन ६००० अण्डों पर १००० रुपये उठते हैं जिनका हिसाब निम्न लिखित है:—

वस्तुएं	व्यय रु०	आ०	पा०
दो इञ्च लम्बे दो इञ्च चौड़े १००० टाट के टुकड़े, मूल्य छः आना प्रति टुकड़ा	३७५	०	०
५० बांस की किश्तियां, मूल्य ४ आना प्रति किश्ती	१२	८	०
अण्डों को ढकने के लिए १२० रज़ाई, मूल्य १ रुपया प्रति रज़ाई	१२०	०	०
चावल के छिलके गर्म करने के लिए लोहे के दो तसले, मूल्य ३ रुपये प्रति तसला	६	०	०
लकड़ी के तख्ते, फ्रेम, चावल के छिलके, इत्यादि	३८०	०	०
ताज़ा चूज़ों को उठाने के लिए १०० टोकरियां, मूल्य १ रुपया प्रति टोकरी	१००	०	०
जोड़	९९३	८	०
या लगभग	१०००	०	०

अण्डों में से बच्चे निकलवाने का तरीक़ा यह है कि सब से पहले अण्डों को सिलंडरों में रखते समय उनकी जांच की जाती है। इसके पश्चात् उन अण्डों को उंगली से बजाकर देखा जाता है जो बच्चे निकलवाने के लिए चुन कर अलग किए जाते हैं। रोशनी के सामने रखकर ताज़गी की जांच उसी समय की जाती है जब यह सन्देह हो जाए कि अण्डा अच्छा नहीं है। इसके पश्चात् महीन टाट के टुकड़ों पर नवे-नवे अण्डों की ढेरियां बना दी जाती हैं और आधे घंटे या उससे कुछ अधिक देर तक उन्हें धूप दी जाती है और कभी २ पल्टा भी जाता है। इसके पश्चात् उन्हें सिलंडरों में रख दिया जाता है। इसके पश्चात् ३ पौंड चावल के छिलके जिन्हें पहले से गर्म कर लिया होता है नवे अण्डों की ढेरी पर बिछा दिए जाते हैं। इस प्रकार एक-एक सिलंडर में

अण्डों या गर्म किए हुए चावल के छिलकों की दस-दस तहें ऊपर तले जमा दी जाती हैं। इस हिसाब से एक-एक सिलंडर में नौ-नौ सौ अण्डे रखे जाते हैं। इसके पश्चात् सिलंडर को रज़ाई या लकड़ी की क़िश्ती से ढक दिया जाता है। सिलंडरों और प्रत्येक अण्डे के तापमान का अधिक से अधिक ध्यान रखा जाता है और इसके साथ ही अण्डों को पलटते भी रहते हैं। अण्डे के तापमान की जांच उसे आंख या गाल से छूकर देखते हैं। सिलंडरों में रखने के पश्चात् तेरहवें दिन अण्डों को सिलंडरों में से निकालकर किश्तियों में रख देते हैं। उन पर रज़ाइयां या टाट डाल देते हैं और उन्हें लगातार पलटते रहते हैं। अट्ठाइसवें दिन बच्चे निकलते हैं। इस तरह सिर्फ़ बत्तख़ के अण्डों में से बच्चे निकलवाए जाते हैं।

———

अन्तिम अध्याय

नतीज़े और सिफारिशें

व्यापार के तरीक़ों की जांच इसलिए की गई है कि मुर्गियां पालने वालों और अण्डे बेचने वालों को अच्छे दाम मिल सकें और अधिक लाभ हो। यह बड़े सौभाग्य की बात है कि अण्डों के व्यापार में कुछ मामूली और सस्ते तरीक़ों पर काम करने से यह बातें प्राप्त की जा सकती हैं।

बिक्री बढ़ाना

बिक्री के ढँगों में जो ख़राबियाँ हैं उन्हें दूर कर लेने से स्थानीय बाज़ार की बिक्री तो बढ़ सकती है परन्तु अधिक अण्डे खाए जाने के फलस्वरूप अधिक खपत होने से जो बिक्री होगी वह धीरे धीरे ही बढ़ेगी। सब्ज़ियाँ, तरकारियाँ खाने वाले जो इस देश में मांस खाने वालों से अधिक हैं, अब धीरे २ अण्डे खाने के ज्यादा आदी होते जाते हैं। जो लोग किसी शकलमें भी जीव को मारना नहीं चाहते वे भी शायद इस बात को समझने लगे हैं कि जिस अण्डे में बच्चा न पड़ा हो उसमें जान नहीं होती। इसके अतिरिक्त शरीर को बढ़ाने वाले पदार्थों की जांच के नतीज़े जानने के पश्चात् लोगों को पदार्थों की छानबीन से ज्यादा लगाव पैदा हो गया है और यह बात उनकी समझ में आने लगी है कि अण्डों में प्रोटीन (Protein) होती है जो शरीर को बढ़ाती और पालती है (हमारे देशवासियों को ख़ूराक़ में प्रोटीन कम होती है)। किन्तु फिर भी हिन्दुस्तान में अण्डों की खपत धीरे २ बढ़ेगी और इसमें समय भी लगेगा।

व्यापार में शीघ्र उन्नति होने की आशा इसलिए विदेशों से व्यापार होने में ही बंधती है। इस समय संसार भर में ५ करोड़ सैकड़ा (सैंकड़ा-१२० अण्डे) ताज़ा अण्डे पैदावार के स्थानों से दिसावर को जाते हैं। इस कुल संख्या में से आधे अण्डे ब्रिटेन में खपते हैं। जमाए हुए अण्डों और अण्डों की ज़र्दी या सफ़ेदी का दिसावर का व्यापार भी १५ लाख (१॥ मिलियन) हंडरवेट का है। इस व्यापार के ६५ प्रतिशत भाग पर चीन ने कब्ज़ा कर रखा है और चीन के भेजे हुए माल का दो तिहाई भाग ब्रिटेन लेता है हिन्दुस्तान से बर्मा और लंका को माल भेजने का व्यापार पिछले वर्षों में सख्त पाबन्दियों के बोझ तले दबा रहा है और यह बात सोचने की है कि इस व्यापार का घाटा पूरा करने के लिए इंगलिस्तान से क्यों न सम्बन्ध जोड़ा जाए जो इस माल का सब से बड़ा ग्राहक है। बंगाल, कोचीन, ट्रावन्कोर और मद्रास के इलाक़ों में जहाँ से ज्यादा से ज्यादा अण्डे बाहर जाते हैं पैदावार को और अधिक बढ़ाया जा सकता है। जमाए हुए अण्डों या अण्डों की ज़र्दी या सफेदी या व्यापार के लिए इन इलाक़ों में फैक्टरियाँ और कारख़ाने खोलकर भी बड़े सीधे साधे ढँग से बिक्री बढ़ाई जा सकती है।

पैदावार बढ़ाना

अण्डे बाहर भेजने के व्यापार को लाभदायक बनाने के लिए यह अनिवार्य है कि इन विशेष इलाकों में जिनका ऊपर वर्णन हो चुका है पैदावार बढ़ाई जाए। अभी तक भारतबर्ष में अण्डों में से बच्चे निकलवाने के कारखाने नहीं खुले हैं। इसलिये यहाँ मुर्गी या बत्तख़ के चूज़ों का व्यापार बिल्कुल भी नहीं होता। अलबत्ता बर्मा में चूज़े पैदा करने और बेचने का व्यापार विशेष प्रबन्ध से चलाया जाता है। इस व्यापार को इसी ढँग से हिन्दुस्तान में भी बहुत कुछ उन्नति दी जा सकती है। ऐग्रिकलचर और लाइव स्टाक डिपार्टमेंटों (खेती बाड़ी और मवेशियों के विभागों) को मुर्ग़ियों और बत्तख़ों और उनके अण्डों की बिक्री बढ़ाने की ओर ध्यान देना चाहिए। इस समय तक तो वे विलायती मुर्ग़ियों की नस्लों ही को रिवाज देने का प्रयत्न करते रहे हैं। देसी मुर्ग़ियों के लिए कुछ नहीं किया गया। और बत्तख़ों का तो कुछ भी ख्याल नहीं रक्खा गया। आजकल के नये ज़माने में इस बात पर बहुत ज़ोर दिया जारहा है कि मवेशी और परिन्द पालने और खेती बाड़ी करने का काम एक साथ किया जाये। इससे आशा होती है कि आगे चलकर मुर्ग़ियां पालना भी खेती बाड़ी के कामों में ख़ासा बड़ा काम समझा जाने लगेगा।

अण्डों की पैदावार का हिसाब रखना

इस देश में मुर्ग़ियों और बत्तख़ों और उनके अण्डों की पैदावार की गिनती रखने की बहुत जरूरत है। स० १६४० में मवेशियों की गिनती के साथ-साथ मुर्ग़ियों और बत्तख़ों की भी गिनती की जावे तो इस से बड़ी सहायता मिलेगी और यदि खेती बाड़ी के महकमों के फार्मों में देसी मुर्ग़ियों और बत्तख़ों के अण्डों की पैदावार का हिसाब रखा जावे तो इससे भी बड़ा फ़ायदा होगा। दस्तूर तो कुछ ऐसा है कि इन दोनों का बहुत कम ध्यान रखा जाता है।

भारत और अन्य देशों के लोग भारत के अण्डों के कारोबार के बारे में कुछ भी नहीं जानते कि यह कितना बड़ा व्यापार है। यदि पैदावार का हिसाब रखा जाय तो मालूम होगा कि भारतवर्ष में अण्डों का कितना बड़ा व्यापार है और उन्हें इसकी तरक्की से लगाव पैदा होगा। बङ्गाल, ट्रावनकोर और कोचीन के इलाकों में अण्डे और अण्डे से बनी हुई चीजें (जैसे जमाए या सुखाए हुए अण्डे) अधिक मिल सकते हैं।

नुक़सान को कम करना

हिसाब लगाने से यह अन्दाज़ा हुआ है कि अण्डे इकट्ठे करते समय हर

साल १४०००० रुपये के अण्डे इकट्ठे ही नहीं होते। कारण यह है कि मुर्गियां पालने का ढंग बहुत ही ख़राब है। अच्छे दरबे बनाने और उन में तार की जाली लगाने से इस नुक़सान को घटाया जा सकता है। यदि ग्रामसुधार के कामों से लगाव रखने वाले इस ओर ध्यान दें तो थोड़ा सा प्रयत्न करने से गांवों में हालत सुधर सकती है।

अण्डे इकट्ठे करने,से एक स्थान दूसरे स्थान को भेजने और ग्राहकों तक पहुँचाने में जो टूट फूट होती है उससे प्रतिवर्ष क़रीब करीब पन्द्रह लाख रुपये का नुक़सान होता है। इस में उन लोगों की कोई भूल नहीं है जिनके हाथों माल एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचता है। बल्कि जिन टोकरियों में अण्डे भेजे जाते हैं वे इतनी कमज़ोर होती हैं कि उन में माल बिना टूटे फूटे एक स्थान से दूसरे स्थान तक नहीं पहुँच सकता। बक्सों में अण्डे भेजने के रिवाज को शीघ्रता पूर्वक फैला देना चाहिये। यदि अण्डों की तहों के बीच में भूसा इत्यादि भी रखा जाने लगे तो भी उस नुक़सान में कमी हो सकती है।

अण्डे ख़राब होने से भी प्रतिवर्ष लगभग अट्ठाईस लाख रुपये का नुक़सान होता है पैदावार के इलाक़ों में शीघ्र और विधि पूर्वक अण्डे इकट्ठे करने से इस नुक़सान में बहुत कुछ कमी हो जावेगी। तीसरे, चौथे, या सातवें, आठवें दिन की पैठों में भी अण्डे ठीक तरह इकट्ठे नहीं होते। अण्डे इकट्ठे करने वालों को प्रति दिन गावों में चक्कर लगा कर अण्डे इकट्ठे करके लाने चाहियें, मगर उन लोगों को नियमानुसार और प्रबन्ध पूर्वक काम करने की आदत डलवाना ज़रूरी है ताकि गाँवों में से लगातार और ढङ्ग से बराबर अण्डे इकट्ठे होने लगें। इस रिपोर्ट में इसके अनेक उपाय बतलाये गये हैं। किन्तु सब से आवश्यक यह है कि गावों के अण्डे इकट्ठे करने वालों और अण्डे बेचने वालों को इस प्रकार प्रबन्ध पूर्वक अण्डे इकट्ठे करने की आदत डलवाई जाये कि वे कोआपरेटिव सोसाइटियाँ बनाकर काम करें।

एक स्थान से दूसरे स्थान को अण्डे भेजते समय भी बहुत नुक़सान होता है इस वास्ते रेल गाड़ियों में अण्डों को हवा और ठन्डक पहुँचाने का अच्छा प्रबन्ध होना चाहिये। किन्तु मुश्किल तो यह है कि जिन स्थानों पर ऐसा प्रबन्ध है वहाँ दूर के स्थानों को अण्डे भेजने वाले उन से कोई लाभ नहीं उठाते ऐसी दशा में यह कार्य रेलवे कम्पनियों को ही करना चाहिये कि वे लोगों को समझावें और इन सुविधाओं से लाभ उठाने के लिए उत्साहित करें। खपत के बड़े बड़े स्थानों पर रेलवे स्टेशनों के पास ही ज्यादा तादाद में कोल्ड स्टोर भी खुलने चाहियें। कोल्ड स्टोरेज की कम्पनियों को भी खुद ही लोगों को अण्डे बर्फ़ में रखने के लाभ बताने पड़ेंगे ताकि वे उससे पूरा पूरा लाभ उठा सकें।

यदि खपत के स्थानों पर थोक के बड़े-बड़े दुकानदार ऐसे कोल्ड स्टोरों के पास ही थोक बाज़ार खोलने के लिए एक-एक सभा बना लें तो मामला बहुत कुछ सुलझ जावेगा। रेलवे कम्पनियों को भी इस ओर ध्यान देना चाहिये।

उबाले हुए अण्डों का व्यापार छोटे पैमाने पर पहिले ही से हो रहा है उसे तरक्की देने में भी लाभ ही है। कारण यह है कि भारतवर्ष में उबाले हुए अण्डे कई प्रकार से भोजनों में इस्तेमाल किये जाते हैं और यह साफ ही है कि उबाले हुए अण्डों के व्यापार में तरक्की होने से अण्डों की टूट-फूट और उनके खराब होने में एक बहुत बड़ी कमी हो जावेगी।

मूल्य के उतार-चढ़ाव के खतरे को घटाना

अण्डों के भाव में औसतन २० प्रतिशत उतार-चढ़ाव होता है। मार्च, अप्रेल में अण्डों का भाव उतार पर और सर्दियों में चढ़ाव पर रहता है। प्रतिदिन भाव में १० या १२ प्रतिशत उतार-चढ़ाव रहता है। अण्डों को कुछ दिनों तक कोल्ड स्टोर में रखने के तरीक़े के रिवाज पा जाने से प्रतिदिन भाव में उतार चढ़ाव होना बन्द हो जायेगा और अधिक दिनों तक अण्डे कोल्ड स्टोर में रखने का ख़र्च भी भावों के मौसमी उतार चढ़ाव से निकल आएगा।

यदि अण्डों के व्यापारियों को आमद और भावों के ठीक २ समाचार जल्दी मिल जाया करें तो आमद की भरमार भी न हुआ करेगी और माल ग्राहकों तक पहुँचने का भी अच्छा प्रबन्ध हो जावेगा। इस समय इस प्रकार के समाचार मिलने का कोई प्रबन्ध नहीं है और यह बात सोचनीय है कि अण्डों के बाज़ार भाव की सूचना देने और आमद पर काबू रखने के वास्ते किसी समाचार संस्था का प्रबन्ध होना चाहिए। अण्डों को ग्रेड करने के अधिक स्टेशन खुल जाने से ब्रिटेन की "एग सैन्ट्रल" नामक संस्था जैसी एक संस्था यहां भी बनाई जा सकेगी। ब्रिटेन की इस संस्था में वहां के "नैशनल मार्क" के अण्डे पैक करने के स्टेशन शामिल हैं।

माल के अच्छे दाम मिलने के उपाय

जो उपाय ऊपर बताए गए हैं उनसे अण्डों के व्यापार को आधे करोड़ से अधिक रुपये के नुकसान से बचाया जा सकता है इसके अतिरिक्त जांच से यह भी मालूम हुआ है कि अण्डों को ढंग से ग्रेड करने से १५ से २० प्रतिशत तक अधिक लाभ होता है। ख़राब अण्डे अलग करने के वास्ते अण्डों को तेज़ रोशनी के सामने रखकर उनकी जांच करना और इसके बाद वज़न के लिहाज़ से छोटे बड़े अण्डे अलग करना बहुत आसान और सस्ता है। जिससे अण्डे के व्यापारियों

और ग्राहकों दोनों ही को लाभ होगा। सरकार के क़ानून एग्रीकलचरल प्रोड्यूस (ग्रेडिंग एन्ड मार्किंग) एक्ट सन् १६३७ के मातहत ग्रेडिंग स्टेशनों की तादाद विशेष प्रबन्ध से बढ़ानी चाहिए।

इस रिपोर्ट में यह दिखला दिया गया है कि यह काम कितनी आसानी से हो सकता है और ग्रेडिंग स्टेशन खोलने और नुक्सान को घटाने में कितना अधिक लाभ है। चूंकि गांवों में घूम कर अण्डे इकट्ठे करने वाले अण्डों के व्यापार की कुँजी हैं और विशेष कर कम से कम १५० स्थान ऐसे हैं जहाँ प्रति . ५०००० अण्डे तक इकट्ठे हो जाते हैं इसलिए प्रान्तीय मार्केटिंग स्टाफ़ और कोआपरेटिव डिपार्टमेंटस् इस काम को बहुत आसानी से कर सकते हैं।